भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 16 | उदयपुर गुरूवार 01 सितंबर 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

इतिहास में पन्नाधाय का योगदान कभी नहीं भुलाया जा सकता : राजनाथसिंह

राजनाथसिंह द्वारा पन्नाधाय, उदयसिंह और चन्दन की प्रतिमाओं का अनावरण

उदयपुर (ह. सं.)। केंद्रीय रक्षामंत्री राजनाथसिंह ने उदयपुर में 30 अगस्त को गोवर्धन सागर स्थित पन्नाधाय पार्क में नवस्थापित पन्नाधाय, उदयसिंह और चंदन की भव्य प्रतिमाओं का अनावरण किया। इस मौके पर केन्द्रीय ऊर्जा राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर, विधानसभा नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया सहित अन्य वरिष्ठ जनप्रतिनिधि एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

केन्द्रीय रक्षामंत्री राजनाथसिंह ने कहा कि उदयपुर में पन्नाधाय, उदयसिंह और चंदन की जो भव्य प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं, वे अनोखी हैं। उन्होंने आज तक पन्नाधाय की ऐसी प्रतिमा हिन्दुस्तान में कहीं नहीं देखी। राजनाथसिंह ने कहा कि राजस्थान की भूमि पर आकर गर्व होता है। इस भूमि को वीर-वीरांगनाओं ने अपने रक्त से सींचा है। यहाँ के इतिहास में वीरों के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। सिंह ने कहा कि अगर पन्नाधाय नहीं होती तो इतिहास ही कुछ और होता। राजस्थान में कोने कोने से शौर्य की गाथाएं सुनने को मिलती हैं। चाहे हाड़ी रानी हो या जोधपुर में अमृतादेवी विश्नोई के नेतृत्व में पेड़ों की रक्षार्थ विश्नोई समुदाय द्वारा दिया गया बलिदान हो।

राजनाथसिंह ने कार्यक्रम में आत्मनिर्भर भारत और रक्षा क्षेत्र में हो रही प्रगति पर कहा कि आज एक आधुनिक भारत का निर्माण हो रहा हैं। सरकार ने तय किया है कि 2047 तक पौने तीन लाख करोड़ का रक्षा निर्यात भारत से किया जाएगा क्योंकि हम भारत को आत्मनिर्भर भारत बनाना चाहते हैं। सेना की जरूरतों का साजोसामान हम यहीं भारत में बनाना चाहते हैं और रक्षा खरीद का 68 फिसदी हिस्सा भारत से ही खरीदेंगे। रक्षामंत्री ने कहा कि भारत ने हमेशा विश्व को वसुधैव कुटुंबकम का संदेश दिया है। ऐसा सन्देश पूरे विश्व में भारत से ही गया है। भारत ने कभी किसी भी देश की एक इंच जमीन पर भी कब्जा नहीं किया और भारतीय सेनाओं के रहते कोई भी भारत की एक इंच जमीन पर भी कब्जा नहीं कर सकता।

केन्द्रीय ऊर्जा राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने कहा कि राजस्थान की धरती को कई वीरों और वीरांगनाओं ने अपने बलिदान से सींचा है। उनमें से पन्नाधाय भी एक है। यहाँ कई वीरांगनाओं ने राजभक्ति के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर किया है। अपने पुत्र

को बलिदान कर देना कोई मामूली बात नहीं है, लेकिन पन्नाधाय ने राजभक्ति के लिए, अपने राज्य की रक्षार्थ अपने पुत्र को बलिदान कर दिया, ऐसा बलिदान विश्व में सर्वोच्च बलिदान है।

विधानसभा नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने बताया कि किस तरह पन्नाधाय ने मेवाड़ के राजकुमार उदयसिंह को बचाने के लिए अपने पुत्र चंदन को बनवीर के हाथों सौंप दिया। बनवीर ने पन्नाधाय की आँखों के सामने ही चंदन के प्राण ले लिए। कटारिया ने कहा कि पन्नाधाय ने जो त्याग अपने राज्य की रक्षार्थ किया उसे कभी भी नहीं भुलाया जा सकता। ऐसा बलिदान विश्व में कहीं नहीं हुआ। कटारिया ने कहा कि मेवाड़ ने कभी गुलामी स्वीकार नहीं की। यहाँ के वीरों ने हमेशा अपने राज्य के लिए संघर्ष का रास्ता अपनाया और अपने प्रदेश को स्वाधीन रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने आभार व्यक्त किया। पन्नाधाय की प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम में बांसवाड़ा सांसद कनकमल कटारा, चित्तौड़गढ़ सांसद सी. पी. जोशी, पूर्व मंत्री मदन दिलावर, उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, मावली विधायक धर्मनारायण जोशी, झाड़ोल विधायक बाबूलाल खराड़ी, गोगुन्दा विधायक प्रतापलाल भील, सलूम्बर विधायक अमृतलाल मीणा, गुर्जर समाज अध्यक्ष रामेश्वरलाल गुर्जर, महापौर जी.एस. टांक, उपमहापौर पारस सिंघवी सहित कई वरिष्ठ जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

प्रदेश के 4 चिकित्सा महाविद्यालयों में स्थापित होगी फिंगरप्रिंट लैब

जयपुर (सुजस)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रदेश के जयपुर, जोधपुर, कोटा एवं उदयपुर स्थित चिकित्सा महाविद्यालयों में फिंगरप्रिंट लैब की स्थापना हेतु 23 करोड़ 40 लाख रूपए (प्रत्येक के लिए 5.85 करोड़) की राशि की स्वीकृति दी है।

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री ने राज्य में लंबित गंभीर आपराधिक प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण हेतु चिकित्सा महाविद्यालयों में डीएनए फिंगरप्रिंट सुविधाओं का विस्तार करने की घोषणा की थी। उक्त राशि से महाविद्यालयों में फिंगरप्रिंट लैब के निर्माण के लिए सिविल वर्क, लैब के संचालन हेतु विभिन्न उपकरण, फर्नीचर, केमिकल एवं कंज्यूमेबल आइटम की खरीद तथा आवश्यक विभिन्न संवर्गों के पदों का सृजन किया जाएगा। मुख्यमंत्री की इस स्वीकृति से राज्य में आपराधिक प्रकरणों के सटीक, प्रभावी तथा त्वरित अनुसंधान में सहायता मिलेगी तथा पीड़ितों को कम समय में न्याय मिल सकेगा।

अभी तो भ्रष्टाचार के दम पर खड़े टावरों की सुध लेना शेष है

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक -

सुपरटेक द्वारा निर्मित नोएडा के दो संयुक्त टॉवरों का गिराया जाना अपने आप में ऐतिहासिक घटना है। पहले भी अदालत के आदेशों और सरकारों के अपने हिसाब से कई इमारतें भारत के विभिन्न प्रांतों में गिराई गई हैं लेकिन जो इमारतें कुतुब मीनार से भी ऊंची हों और जिनमें 7000 लोग रह सकते हों, उनको अदालत के आदेश पर गिराया जाना सारे भारत के भ्रष्टाचारियों के लिए

एक कड़वा सबक है। ऐसी गैर-कानूनी इमारतें सैकड़ों-हजारों की संख्या में सारे भारत में खड़ी कर दी गई हैं। नेताओं और अफसरों को रिश्वतों के दम पर ऐसी गैर-कानूनी इमारतें खड़ी करके मध्यमवर्गीय ग्राहकों को अपने जाल में फंसा लिया जाता है। वे अपना पेट काटकर किश्तें भरते हैं, बैंकों से उधार लेकर प्रारंभिक राशि जमा करवाते हैं और बाद में उन्हें बताया जाता है कि जो फ्लेट उनके नाम किया गया है, अभी उसके तैयार होने में काफी वक्त लगेगा। लोगों को निश्चित अवधि के दस-दस साल बाद तक उनके फ्लेट नहीं मिलते हैं। इतना ही नहीं, नोएडा में बने कई भवन ऐसे हैं, जिनके फ्लेटों में बेहद घटिया सामान लगाया गया है।

ये भवन ऐसे हैं कि जिन्हें गिराने की भी जरुरत नहीं है। वे अपने आप ढह जाते हैं, जैसे कि गुड़गांव का एक बहुमंजिला भवन कुछ दिन पहले ढह गया था। **नोएडा के ये संयुक्त टावर सफलतापूर्वक गिरा दिए गए हैं लेकिन भ्रष्टाचार के दम पर जिनको खड़े किए गए हैं, उनको गिराने का कोई समाचार अभी तक सामने नहीं आया है। जिन नेताओं और अफसरों ने ये गैर-कानूनी निर्माण होने दिए हैं, उनके नामों की सूची उत्तरप्रदेश की योगी सरकार द्वारा तुरंत जारी की जानी चाहिए। उन नेताओं और अफसरों को अविलंब दंडित किया जाना चाहिए। उनकी पारिवारिक संपत्तियों को जब्त किया जाना चाहिए। जो नौकरी में हैं, उन्हें बर्खास्त किया जाना चाहिए। जो सेवानिवृत्त हो गए हैं, उनकी पेंशन बंद की जानी चाहिए। अदालतों को चाहिए कि उनमें से जो भी दोषी पाए जाएं, उन अधिकारियों को तुरंत जेल भेजा जाए। कुछ नेताओं और अफसरों को चैराहों पर खड़े करके हंटरों से उनकी चमड़ी भी उधेड़ दी जाए ताकि भावी भ्रष्टाचारियों के रोंगटे खड़े हो जाएं।**

उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यदि यह करतब करके दिखासकें तो उनकी छवि 'भारत के महानायक' की बन जाएगी। इन 30-30 मंजिला भवनों को बनाने की इजाजत देनेवाली 'नोएडा अथॉरिटी' को सर्वोच्च न्यायालय ने 'भ्रष्ट संगठन' की उपाधि से विभूषित किया है। यदि केंद्र और उत्तरप्रदेश सरकार इस मुद्दे पर चुप्पी मारे रखे तो मैं अपने पत्रकार बंधुओं से आशा करूंगा कि इन गैरकानूनी भवनों के निर्माणकाल में जो भी मुख्यमंत्री, मंत्री और अधिकारी रहे हों, वे उनकी सूची जारी करें और उनके भ्रष्टाचार का भांडाफोड़ करें।

अदालतों में बरसों तक माथाफोड़ी करने की बजाय **लोकतंत्र के चौथे स्तंभ याने खबरपालिका को इस समय सक्रिय होने की जरुरत है।** ईंट-चूने के गैरकानूनी भवनों को गिराना तो बहुत सराहनीय है, लेकिन उससे भी ज्यादा जरुरी है- भ्रष्टाचार के भवन को गिराना! किसकी हिम्मत है, जो इसको गिराएगा?

सांवत्सरिक क्षमायाचना

विगत वर्ष में हमारे द्वारा यदि किसी को जाने-अजाने अथवा भूलवश कुछ कहने-सुनने में आया हो तो हम सबसे हाथजोड़ मानमोड़ मन-वचन-काया से क्षमायाचना करते हैं।

- शब्द रंजन परिवार

पोथीखाना

राजस्थान में जैन सांस्कृतिक वैभव का संदर्भ ग्रंथ

जैनसंस्कृति ने समय-समय पर उत्तर और दक्षिण भारत के विभिन्न राजवंशों एवं बहुजन समाज को प्रभावित किया है। साहित्य की अनेक विधाओं में जैन साहित्य उपलब्ध है। युगानुसार अनेक भाषाओं में यह लिखा गया है।

राजस्थान में जैनधर्म के विकास और प्रसार में समाज के सभी लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विभिन्न आचार्यों, संतों और श्रावकों का जनसाधारण के साथ ही नहीं वरन् यहाँ के राजा-महाराजाओं के साथ भी घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। शिक्षा प्रसार, स्वास्थ्य सेवाएँ, सिंचाई सुविधाएँ, यातायात के साधनों को विकसित करने, पेयजल की समस्या का समाधान करने और राज्य में अकाल से निपटने के लिये सेठ साहूकारों ने अधिक से अधिक आर्थिक सहायता की है। औद्योगीकरण में नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

दिगम्बर और श्वेताम्बर समाज में अनेक प्रभावशाली जैनसन्त एवं साध्वियों के जीवनचरित प्रेरणादायी हैं। जैन लेखकों ने राजस्थान के इतिहास और संस्कृति के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी दी है। प्राचीनकाल से ही जैनियों में इतिहास लिखने की सुदृढ़ परम्परा रही है। कालगणना सम्बन्धी जैनियों का ज्ञान उल्लेखनीय रहा है।

जैनधर्म के विकास के लिए मेवाड़ एवं मारवाड़ की भूमि अधिक उर्वरा प्रमाणित हुई है। आठवीं शताब्दी तक जैनधर्म सभी क्षेत्रों में विकसित हो चुका था। ग्रन्थों की सुरक्षा एवं संग्रह की दृष्टि से जैनाचार्यों, मुनियों, यतियों, सन्तों एवं विद्वानों का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राजस्थान में लगभग 300 जैन

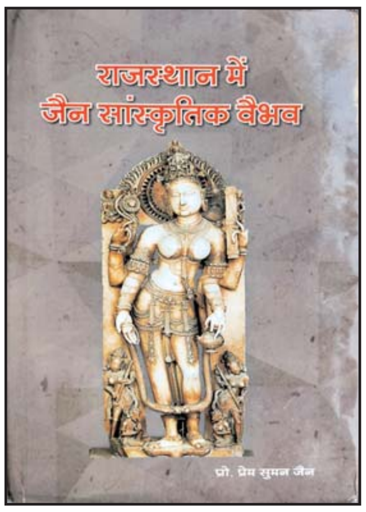

ग्रन्थभण्डार हैं, जिनमें 3 लाख से अधिक पाण्डुलिपियाँ संग्रहीत हैं।

स्वतन्त्रता के बाद विश्वविद्यालयों में साहित्य, इतिहास, दर्शन विषयों के संबद्ध कई जैन-शोधग्रंथ लिखे गये। इस शताब्दी में अनेक क्षेत्रों में जैन समाज के बहुत से प्रशासनिक, न्यायविद, पर्यावरणविद, स्वास्थ्य सेवा मे समर्पित समाजसेवी, दार्शनिक, प्रोफेसर, लेखक, वैज्ञानिक, कृषिशास्त्री, इंजीनियर, डाक्टर, लोककलाविद, इतिहासज्ञ आदि देशसेवा में सक्रिय हैं। धर्म, समाज और संस्कृति के ये सभी बिन्दु राजस्थान में जैन सांस्कृतिक वैभव की गाथा कहते हैं।

जैनविद्या एवं प्राकृत के वरिष्ठ मनीषी प्रो. प्रेमसुमन जैन ने 'राजस्थान में जैन सांस्कृतिक वैभव' में इस सबका प्रामाणिक रूप में विवरण दिया है। इसप्रकार यह पुस्तक राजस्थान में जैनधर्म और संस्कृति के इतिहास को जानने, समझने के लिए एक महत्वपूर्ण सन्दर्भग्रन्थ है। आशा है, सभी वर्गों के पाठकों के लिए यह ग्रन्थ उपयोगी होगा। इसका प्रकाषन प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर ने किया है।

इस प्रकार प्रस्तुत ग्रन्थ कुल नौ अध्यायों में विभक्त है। इनमें क्रमशः जैनधर्म-दर्शन, विभिन्न राजवंश और जैनधर्म, प्राकृत और अपभ्रंश की धरोहर, संस्कृत की थाती जैन संस्थाएं, राजस्थानी भाषा के जैनकवि, इतिहास पुरातत्व ग्रन्थ भण्डार, जैन कला वैभव और समृद्ध समाज, आधुनिक युग के जैन आचार्य तथा जैन व्यक्तित्व एवं साहित्यकार से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सामग्री दी गई है।

अकादमी के संस्थापक-संचालक प्रसिद्ध विद्वान देवेन्द्रराज मेहता ने प्रकाशकीय वक्तव्य में लिखा है- 'लम्बे समय बाद आधुनिक युग तक राजस्थान में जैन संस्कृति का जो विकास हुआ है, उस पर कोई प्रामाणिक ऐतिहासिक पुस्तक की कमी अनुभव की जा रही थी। प्रो. प्रेमसुमन जैन ने यह पुस्तक लिखकर एक बड़ी कमी को पूरा किया है।'

प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, गुरुनानक पथ, मालवीय नगर, जयपुर-302017 से प्रकाशित कुल 368 पृष्ठों की विशद जानकारी लिए यह ग्रन्थ 750 रूपया मूल्य का है।

- डॉ. देव कोठारी

सपनों की छाँव में पीड़ा का पर्यवसान

मेरे सामने राजस्थान की वरिष्ठ कवयित्री डॉ. विद्या पालीवाल की विनम्र भाव-संबलित कुल 139 कविताओं का उनकी हस्तलिपि का प्रकाशन संग्रह 'सपनों की छाँव' है। इसके पांच खण्डों वन्दन, स्पन्दन, स्मरण, चिन्तन और विविध में क्रमशः 19, 24, 26, 30 और 40 कविताओं को संग्रहीत किया गया है।

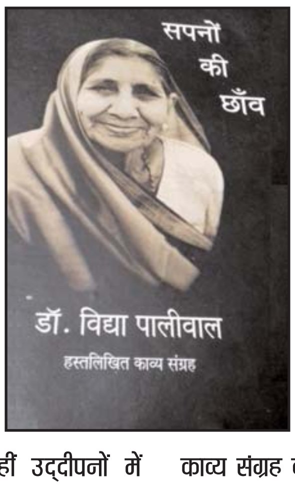

इन कविताओं में अनहद की धुन पर थिरकता अध्यात्म है। प्रकृति के साहचर्य में अपने प्राणों की कसक के उत्स को ढूंढता कवयित्री का मन उन्हीं उद्दीपनों में आलम्बन खोजता है। कभी-कभी रसदशा का चरम उन्मेष तन-मन को अतीन्द्रीय सत्ता में समाहित कर देता है। यहां प्रकृति के ये उपादान प्रिय के प्रतीक बने हैं।

इन कविताओं में प्रभु से प्रार्थनाएं हैं। आज की स्थितियों में असन्तुलित सृष्टि का दुःख हरने की कृपाकांक्षाएं हैं। नया स्नेह, नई चेतना, नया सौहार्द लेकर मति-गति-लय के माध्यम से सृष्टि के सन्तुलन की कामना है। विषाद और भय से पीड़ित आर्त मानवता के लिए सर्वशक्तिमान की करूणा और स्नेहापूरित रसवन्ती चितवन की कामना है जिससे सर्वे भवन्तु सुखिनः की अनुभूति स्थापित हो सके।

कवयित्री की अपनी हर पीड़ा का पर्यवसान अध्यात्म में होता है, ठीक महादेवी वर्मा की तरह। इस प्रकार इन कविताओं में अपनी पीड़ा को अध्यात्म में विलीनीकरण करके कवयित्री मुक्त हो जाती है। यहां कविता विरेचन करती है। ऐसी कविताएं अचेतन की जितनी भी गुत्थियां हैं, जीवन के जितने भी दुःख हैं, विकार हैं; उन सभी की परिष्कृति करती हुई प्रतीत होती है।

'सपनों की छाँव' काव्य संग्रह को रचनाकार ने मूल्यांकन सापेक्ष, करूणा सापेक्ष भाव से, दृष्टि से इस दुनियां को देखा है। इसमें कोमल भावों का चरमोत्कर्ष है। छायावादी छटा बिखेरती सान्द्र अनुभूतियां हैं। डॉ. पालीवाल ने इन कविताओं में अनुप्रास का लयात्मक सौन्दर्य रचा है।

आत्मकथ्य में पहली कविताओं (1947, 48 और 1950 में लिखी कविताओं) का उल्लेख है। इन कविताओं का रचनाकाल उन भाग्यशाली क्षणों का रेखांकन है जब विद्याजी के रोमांचित प्राणों ने आजादी की सुनहली धूप का रसपान किया था। विचार की दृष्टि से देखें तो इसमें मीरां की आकुल प्रतीक्षा है। भाव और शिल्प की भूमि पर यहां महादेवी के अज्ञात-प्रियतम से मिलन की तृष्णा है। उदात्त भाव की पराकाष्ठा में कहीं-कहीं राधिका से समझाइश भी है।

संग्रह की कविताओं को पढ़कर ऐसा महसूस होता है कि जब हम प्रेम, वात्सल्य और करूणा की पीड़ा से लबालब होकर इनके दंश का चरम भोगते हैं। आवेग में होते हैं तो छायावाद का स्पर्श स्वाभाविक मनोविज्ञान है। सृष्टि रचयिता का स्मरण, अभ्यर्थना भी सहज रूप से कविताओं का प्रतिपाद्य बन शब्द उसके केन्द्र की धुरी बनते नृत्य करने लगते हैं। यही डॉ. विद्या पालीवाल की कविताओं का आधार स्तम्भ बना है और इसी पृष्ठभूमि पर उनका मूल्यांकन किया जाने योग्य है।

पुस्तक का मुद्रण सुन्दर है। डॉ. सुबोध पालीवाल के चित्रांकन ने नयनाभिराम सौन्दर्य को उकेरते हुए पुस्तक के प्रकाशन को गुणवत्ता प्रदान की है। डॉ. विद्या पालीवाल के हस्तलिखित मोती जैसे अक्षरों ने पुस्तक में चार चांद जड़ दिये हैं। हम उम्मीद करते हैं कि डॉ. विद्या पालीवाल भविष्य में और भी सुन्दर कृतियों से साहित्य जगत को समृद्धि प्रदान करेंगी। बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित यह कृति 599 रूपये मूल्य की है।

- डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ

अकादमी अध्यक्ष का स्वागत

उदयपुर में 24 अगस्त 2022 को राजस्थान साहित्य अकादमी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण का स्वागत करते संप्रति संस्थान के संस्थापक डॉ. महेन्द्र भानावत।

फोटो - डॉ. कुंजन आचार्य

गवरी विषयक परिसंवाद में भागीदारी

29 अगस्त को आकाशवाणी केन्द्र में आदिम लोकनृत्य गवरी विषयक परिसंवाद में भाग लेते कार्यक्रम अधिकारी महेन्द्रसिंह लालस, डॉ. महेन्द्र भानावत हरीश 'आग्नेय' तथा डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'। उल्लेखनीय है कि इन दिनों गवरी प्रदर्शन हो रहा है। डॉ. भानावत ने इसी पर शोध करते 1968 में पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की थी।

प्रदेश की अकादमियों में अध्यक्षों की नियुक्ति

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान सरकार ने विभिन्न अकादमियों में लम्बे समय से खाली पड़े अध्यक्ष पदों पर अन्ततोगत्वा राजनीतिक नियुक्तियां कर दी हैं।

डॉ. दुलाराम सहारण

डॉ. शिवराज छंगाणी

डॉ. सरोज कोचर

डॉ. इकराम राजस्थानी

इनमें उदयपुर स्थित राजस्थान साहित्य अकादमी में चुरू के डॉ. दुलाराम सहारण की नियुक्ति के साथ ही गीतकार किशन दाधीच तथा साहित्यकार मीठेश निर्मोही को सरस्वती सभा का सदस्य मनोनीत किया है। बीकानेर स्थित राजस्थानी भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी में शिवराज छंगाणी, ब्रजभाषा अकादमी में रामकृष्ण शर्मा, संस्कृत अकादमी में सरोज कोचर तथा राजस्थान ललितकला अकादमी में लक्ष्मण व्यास को मनोनीत किया है। इन नियुक्तियों के अलावा पं. जवाहरलाल नेहरू बालसाहित्य अकादमी में इकराम राजस्थानी अध्यक्ष बनाये गये हैं। इस अकादमी की घोषणा पूर्व बजट में की गई थी। इस दृष्टि से अभी इस अकादमी का कार्यालय से लेकर कार्यविधि का स्वरूप नये सिरे से दिखाना होगा। अन्य अकादमियों में सिंधी, उर्दू तथा पंजाबी अकादमी के अध्यक्षों की नियुक्ति प्रतीक्षा में ही है। शब्द रंजन की बधाई।

वे अपनी 'रणवीर' विरासत छोड़ 'नाट्यवीर' होगये

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा 24 अगस्त को प्रसिद्ध रंगकर्मी रणवीरसिंह को श्रद्धांजलि दी गई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण ने उन्हें रंग आन्दोलन से सक्रिय जुड़ते हुए सधे हुए नाट्यकर्मी, नाट्य लेखक, निर्देशक और फिल्मी कलाकार के रूप में उनके योगदान को रेखांकित किया। लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि उन्होंने अपनी परम्पराजनित विरासत को त्यागकर नाट्यक्षेत्र में नयी विरासत स्थापित कर विशिष्ट पहचान बनाई। इस दृष्टि से वे रणवीर की जगह नाट्यवीर ही हो गये। डॉ. हेमेन्द्र चण्डालिया ने उन्हें प्रगतिशील जनवादी मूल्यों के लिए आजीवन सक्रिय रहनेवाला सजग संवेदनशील लेखक बताया। सभा में किशन दाधीच, मीठेश निर्मोही, डॉ. प्रमिला चण्डालिया, डॉ. हमेन्द्र पाणेरी, रामदयाल मेहरा, डॉ. बसंतसिंह सोलंकी, अशोक जैन, अमित श्रीमाली, इत्यादि की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। संयोजन डॉ. कुंजन आचार्य ने किया।

नंदराम माली नहीं रहे

उदयपुर निवासी नंदराम माली का 29 अगस्त को निधन हो गया। वे नगर विकास प्रन्यास में भवन निरीक्षक रहे। उनका सम्पर्क लेखकों से बहुत रहा। उन्होंने अधिकांश लेखकों का साहित्य पढ़ा ही नहीं, उनका सम्मान कर उनकी पुस्तकें भी छपाईं। शब्द रंजन कार्यालय में चार दिन पूर्व ही वे तशरीफ लाये और पठनीय साहित्य ले गये। संप्रति संस्थान द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

- डॉ. तुक्तक भानावत

स्मृतियों के शिखर (148) : डॉ. महेन्द्र भानावत

कठपुतलियों द्वारा अमरसिंह राठौड़ का जीवंत जतन

राजस्थान वीरों की धरती के रूप में जग विख्यात है। इनकी वीरता की कहानियां एक-से-बढ़कर-एक ऐसी अकल्पनीय मिलती हैं कि इतिहास आंखों पर चढ़ आता है। कई बार तो विश्वास ही नहीं होता कि ऐसे बांके बलशाली वीर योद्धा इस धरती पर हा सकते हैं। ऐसी ही कहानी वीरांगनाओं की है।

इसमें राजस्थान सबसे अग्रणी कहा गया है। यहां गढ़ तो चितौड़गढ़ है और घाटी तो हल्दीघाटी है। यहीं शूरवीर प्रताप हुए तो दानवीर भामाशाह भी। राणा सांगा, पद्मिनी, जवाहरबाई, गोरा-बादल, जयमल, पत्ता, कल्लाजी राठौड़ जैसे रणबंका हुए। ऐसा ही वीर महाबली अमरसिंह राठौड़ हुआ।

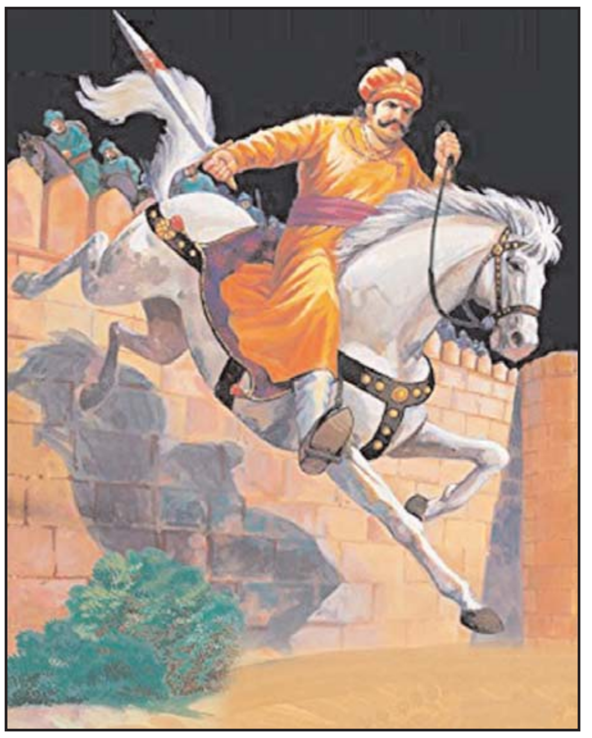

इन वीरों के नाम इतिहास में तो अधिक अंकित नहीं हो पाये पर जन-जन में लोकानुरंजन के प्रदर्शनों ने अब तक जीवन्त बनाये रखा है। राजस्थानी ख्यालों में यहां के खिलाड़ियों ने अमरसिंह राठौड़ को रात-रात भर के प्रदर्शनों द्वारा जीवन्तता प्रदान किये रखी वह तो लाजवाब है ही पर कठपुतली खेलों में भी भाटों ने अपनी पुतलियों के माध्यम से जो करिश्माई कमाल दिखाया वह सर्वथा अद्‌भुत और बेमिशाल है।

ऐतिहासिक दृष्टि से अमरसिंह राठौड़ का परिचय तो यही है कि उसने अपने अनुपम शौर्य और युद्ध-कौशल द्वारा मुगल बादशाह शाहजहां से नागौर की जागीर और राव का खिताब पाया। 17 अप्रेल 1613 को जन्मा। जोधपुर के महाराजा गजसिंह ने राजपूती परम्परा के विपरीत उसे काले वस्त्र, टोपी और ढाल-तलवार के साथ काले घोड़े पर बैठाकर निष्कासित कर दिया।

शाहजहां ने उसे मुगल सेना में उच्च पद प्रदान कर तीन हजारी मनसब के साथ नागौर की जागीर और राव उपाधि प्रदान की। अपने अक्खड़ स्वभाव के कारण शाही दरबार में विरोधी दरबारियों ने बादशाह को भड़का दिया। इस पर शाहजहां ने दण्ड स्वरूप जुर्माना लगाकर उसकी सम्पत्ति से वसूल करने का आदेश दे दिया। शूरवीर अमरसिंह ने दरबार में ही कह दिया कि मेरी सम्पत्ति तो यह तलवार है। जिसमें दम हो वह मेरे से जुर्माना वसूल ले।

मुगल दरबार की प्रस्तुति

भरे दरबार में सलावत खां द्वारा उनके लिए गंवार शब्द का प्रयोग असह्‌य हुआ देख अमरसिंह पांच हजारी और सात हजारी मनसबदारों के बीच से गुजरते सिंहासन के पास पहुंचे और छलांग लगाकर सलावत खां को दबोच अपनी कटार सलावत खां की छाती के पार कर दी। गुस्से में अमरसिंह ने बादशाह पर भी तलवार उठाई किन्तु वह बचकर महल में भाग गया। इस काण्ड में पांच मनसबदार भी मौत के घाट उतार दिये गए।

मुगल सेना से जूझता नागौर का अमर शिरोमणी किले की फसील पर पहुंचा और घोड़े को कुदाकर विशाल खाई पार कर निकल गया। इस घटना से स्तब्ध अमरसिंह के साले अर्जुन गौड़ ने बादशाह की कृपा प्राप्त करने के लिए किले की खिड़की से प्रवेश करते वक्त अमरसिंह पर धोखे से कटार चलाकर हत्या करदी।

कहा जाता है कि वीर अमरसिंह के साथ उसकी पत्नी बूंदी राजकुमारी ने सहगमन किया। तदनन्तर किले के उस द्वार को ईंटों से चिनवाकर सदैव के लिए बन्द करवा दिया गया। तब से वह द्वार 'अमरसिंह का फाटक' नाम से विख्यात हुआ जिसे सन् 1809 में जॉर्ज स्टील ने खुलवाया।

इधर लोकजीवन में झांके तो अमरसिंह राठौड़ के कथा-किस्से विभिन्न रूपों में व्याप्त हैं। कहावत-मुहावरों में भी उसके शौर्यमय चरित्र के संकेत मिलते हैं। ख्याल-तमाशों में तो राजस्थान के विभिन्न अंचलों में विभिन्न शैलियों में अमरसिंह की प्रस्तुतियां मिलती हैं। मेलोंठेलों में उनके नाम की ख्याल पुस्तकें भी कई निकली हैं। कुछ का संग्रह मेरे अपने संग्रह में भी है।

किन्तु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण यादगार कठपुतली भाटों द्वारा ही संरक्षित एवं सुरक्षित की हुई मिलती है। लोक में प्रचलित कई नाट्य प्रकारों का उद्‌भव शिव-पार्वती से हुआ माना जाता है। निसन्देह कठपुतली का प्रारम्भ भी इन्हीं से हुआ है। यह कठपुतली काठ निर्मित होने के कारण काठपुतली नाम से ही जानी जाती रही। कठपुतली खेल के प्रारम्भ में ढोलक बजानेवाली महिला भी ढोलकी की थाप के सहारे गीत का प्रारम्भ करती गाती है-

बैल चढ़े शिवजी मिले, पूरण हो सब काम।
खेल काठपुतली करां, लेके हरि का नाम।।

यह संयोग ही है कि पहलीबार भारतीय लोककला मण्डल द्वारा सन् 1958 में लोककलाकारों के जो प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये उसमें एक दल कठपुतली नचानेवाले भाट का था। यह दल नागौर का ही था जो अमरसिंह राठौड़ का खेल प्रदर्शित करता था। इस दल का मुखिया नाथू भाट था। इसके अलावा उसका पुत्र हनुमान, हनुमान की बहू टोलकी और उसका छोटा बच्चा था।

कठपुतली का पहला खेल 'सिंहासन बत्तीसी' नाम से अस्तित्व में आया। यह उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के समय प्रचलित हुआ कहा जाता है। राजा विक्रमादित्य बड़ा न्यायप्रिय राजा था जो जिस सिंहासन पर बैठकर न्याय करता था वह 'सिंहासन बत्तीसी' नाम से मशहूर था। यह सिंहासन मांडू में था जिसे 32 पतलियां संचालित करती थीं। इस सिंहासन पर बैठकर राजा मनुष्य जाति ही नहीं, बत्तीस गति वाले लोक का न्याय करता था। नागलोक तक के जीव यहां आकर न्याय पाते थे। पुतलियां सत-असत का पता लगाकर राजा को खबर देती तदनुसार राजा न्याय करता।

'सिंहासन बत्तीसी' के बाद 'पृथ्वीराज-संयोगिता' का खेल कठपुतली भाटों में प्रचलित हुआ और तदनन्तर 'अमरसिंह राठौड़' का खेल दिखाया जाने लगा जो आजादी के बाद तक देखा गया पर अब शायद ही कोई इक्का-दुक्का इसे प्रदर्शित करता हो।

भारतीय लोककला मण्डल ने ही पहलीबार इस खेल की सुध ली और नाथू भाट को कला मण्डल में रखकर उसकी समग्र तकनीकी जानकारी प्राप्त कर अपने कलाकारों द्वारा 'मुगल दरबार' नाम से पुनर्जीवन दिया। इस पूरी प्रारम्भ से लेकर आखिर तक की कार्ययोजना तथा खेल प्रस्तुति तक मेरा व्यवस्थापन से लेकर लेखन-मंचन तक मुख्य-प्रमुख योगदान रहा। पहलीबार मैंने अमरसिंह राठौड़ खेल का बिना कुछ जोड़े-घटाये हू-ब-हू प्रदर्शनधर्मी स्क्रिप्ट लिखा और उसी शैली में यत्किंचित युगानुरूप परिवर्तन कर 'मुगल दरबार' तैयार किया।

इसे संयोग कहिये कि सन् 1965 में बुखारेस्ट में तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह हुआ जिसमें कला मण्डल ने भारतीय प्रतिनिधि के रूप में भाग लेकर विश्व का प्रथम पुरस्कार अर्जित किया। इस समारोह में 33 राष्ट्रों के 55 कठपुतली दलों ने भाग लिया।

कठपुतलियों में इस दृश्य का मंचन-परिसंवाद देखिये-

परदे पर शाहजहां का दरबारी दृश्य आगरे के लाल किले का है। अमरसिंह सात दिन में लौट आने की कौल कर छुट्टी पर जाता है किन्तु अपनी नवपरिणिता के प्रेम में आसक्त हो छह माह गुजार देता है। इस पर बादशाह अपने साले सलावतखां के सिखाने में आकर अमरसिंह पर खफा हो उठता है और उस पर दण्ड की घोषणा करता है।

यह सुन वहां उपस्थित अमरसिंह का रजपूती खून उबल पड़ता है। वह दण्ड की रकम जमा कराने के बहाने खड़ा होकर बादशाह के पास जाने को उद्यत होता है कि सलावतखां उसे रोक देता है। दोनों की आपस में तकरार होती है।

ढोलकवाली - 'और अब उठे अमरसिंह राठौड़'
'क्या तलवार चलती है और क्या झगड़ा होता है।'
(त्वरित गति से अमरसिंह उठता है)

सलावतखां - 'अमरसिंह कहां जाते हो?'
अमरसिंह - 'बादशाह के पास।'
सलावतखां - 'वहां जाने का ओडर नहीं है।'
अमरसिंह - 'क्यों नहीं है?'
सलावतखां - 'सात दिन का कौल किया, छै महीने गुजर गये।
हाडी रानी ब्याह के हिन्दू मुजरे तक नहीं आये।
सात दिन के सात लाख रूपये जुर्माना रखो।'
अमरसिंह - 'तीन लाख ले लो।'
सलावतखां - 'नहीं, चौदह लाख।'
अमरसिंह - 'एक पाई नहीं दूंगा।'
सलावतखां - 'हटबे, हिन्दू गंवार।'
अमरसिंह - 'आज कहा गंवार, कल देगा गाली' यह ले चोट
अमरसिंह की, भरी है कि खाली।'

यह कहते ही अमरसिंह सलावतखां का सिर उड़ा देता है। उसके बाद वह बादशाह पर हमला करता है पर बादशाह वहां से भाग निकलता है। अन्त में अमरसिंह का साला अर्जुन गौड़ अमरसिंह को साथ ले जाता है और धोखे से मार देता है। इसी बीच अमरसिंह का भतीजा रामसिंह वहां आ टपकता है जो अर्जुन गौड़ का धड़ उड़ाकर अपने चाचा का बदला चुकाता है। यहीं कठपुतली का खेल समाप्त होता है।

प्रसिद्धि है कि अमरसिंह राठौड़ की तलवार का वजन मात्र पाव सेर का था जिसके बल पर उसने पूरी मुगल सल्तनत को कंपा दिया था। यह बीजलसार लोहे से निर्मित थी। इसी लोहे से निर्मित वीरवर कल्लाजी राठौड़ की तलवार थी जो दुश्मनों पर वार करती थी। वजन में इतनी हल्की होने के कारण यह विशिष्ट प्रकार की तलवार जिधर और जैसे चाहो मुड़ सकती, बल खाती तथा आंकड़ बांकड हो जाती।

कलामंडल द्वारा विश्व कीर्तिमान :

उल्लेखनीय है कि 1958 में भारतीय लोककला मंडल ने राजस्थान विकास विभाग के सहयोग से लोककलाकारों के चार शिविर आयोजित किये। इनमें राजस्थान के हर क्षेत्र के लोककलाकारों ने भाग लिया। एक नागोर के जीजोट गांव के नाथू भाट का कठपुतली दल भी था। उसको कई दिन कलामंडल में रख पुतली तंत्र का अध्ययन करते हुए संस्थापक देवीलाल सामर द्वारा नवीन नाट्यरचना 'मुगल दरबार' नाम से तैयार की गई। अमरसिंह राठौड़ का पंरपराशील प्रस्तुतिकरण भी तब पहलीबार मैंने ही लिपिबद्ध किया था।

इसी आध्धर पर नव्य-भव्य प्रयोगधर्मी खेल 'मुगल दरबार' पर 1965 में बुखारेस्ट में हुए तृतीय अंतर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में उदयपुर के लोककला मंडल ने विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त किया। इस रचना में मेरा भी योगदान रहा।

**आजादी के अमृत महोत्सव पर आयोज्य
तीन उल्लेखनीय संगोष्ठियां**

(1) त्रिवेणी कला संग्रहालय, उज्जैन में
विमुक्त एवं घुमन्तू जातियों का देवलोक
विषयक 9 से 11 सितम्बर 2022

(2) नेमावर जिला देवास मध्यप्रदेश में
प्रदक्षिणा की संस्कृति
विषयक 8 से 10 अक्टूबर 2022

(3) आदिवर्त जनजातीय एवं लोककला राज्य संग्रहालय
खजुराहो में लोक में अलंकरण : देह भित्ति और भूमि
विषयक 6 से 8 नवम्बर 2022
जनजातीय लोककला एवं बोली अकादमी,
भोपाल का आयोजन
निदेशक : डॉ. धर्मेन्द्र पारे

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 01 सितंबर 2022

सम्पादकीय

शिष्टाचार होता भ्रष्टाचार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'न खाऊंगा न खाने दूंगा' नारे ने सारे जहां से अच्छे कहे जाने वाले भारत राष्ट्र की जड़ें हिलादी हैं, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है मगर सच तो यह है कि भ्रष्टाचार इस कदर व्याप्त हो गया है जैसे शिष्टाचार ही बन गया है।

भ्रष्टाचार की जड़ों को हरी रखनेवालों के हाथ जैसे जगन्नाथ होगये हैं। उनके हाथी सफेद होगये हैं। उनके मुंह सुरसा-से खुल गये हैं। उनका अहम रावण बन गया है। पेपर पर पेपरवेट रखे बिना वह पेपर ही नदारद हो जाता है।

कहा जाता है, लेनेवाला तो दोषी है ही पर देनेवाला भी कम दोषी नहीं है। देनेवाले की धड़कन की सुनवाई कौन कर रहा है। परिक्रमा करते-करते उनकी जूतियां घिर जाती हैं, तले फट जाते हैं मगर उनका काम 'भजो राम' हुआ दिखता है।

आजादी के रणांगन में शहीद हुए सैनिकों ने और स्वतंत्रता सेनानियों के अलावा प्रत्येक देशवासी ने जो कल्पना की थी, सपने देखे थे वे पिचहतर वर्ष बाद भी ध्वस्त हुए ही लग रहे हैं मगर हम निराश कदापि नहीं है।

मालूम है, देश बहुत बड़ा है और समस्याएं तो उससे भी बड़ी हैं। ऐसी स्थिति में धीरे-धीरे ही सही, ऋतु आये फल तो लगेंगे ही। हम सब आशावादी हैं। सबका साथ, सबका विकास और सबका प्रयास ही पुन: 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' के मंगल गीत गाएगा।

मोलेला की मृणमूर्तियों पर शोधरत डॉ. कक्कड़

उदयपुर (ह. सं.)। 19 अगस्त को अहमदाबाद के इंडस विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर डॉ. अंकुर कक्कड़ ने डॉ. महेन्द्र भानावत के निवास पर भेंट कर बताया कि वे पंजाब के रहने वाले हैं और विदेश में रहते उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि ग्रहण की। इन दिनों वे मेवाड़ में मोलेला स्थित कुम्हारों द्वारा लोकदेवी-देवताओं की परम्पराशील माटी की मूर्तियों के सम्बन्ध में शोध परियोजना पर अध्ययनशील हैं।

डॉ. भानावत ने बताया कि भारतीय लोककला मण्डल में रहते उन्होंने सबसे पहले सन् 1958 में वहां की लोकप्रतिमाओं पर विशेष अध्ययन किया और इस विशिष्ट शिल्पकला को विश्व परिदृश्य दिया। करीब दो घण्टे हुई इस बातचीत में डॉ. भानावत ने मोलेला के पद्मश्री मोहनजी तथा अन्य मूर्ति निर्माताओं के साथ उन प्रतिमाओं को गातोड़जी ले जाकर देवरूप ग्रहण करने और फिर विविध देवरों में विशिष्ट संस्कारों के साथ स्थापित करने की जानकारी दी। डॉ. कक्कड़ के मो. नं. 9810172208 हैं।

सांस्कृतिक केंद्र द्वारा फोटोग्राफी प्रतियोगिता

उदयपुर (ह. सं.)। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की ओर से पुरामहत्व एवं उदयपुर के सौन्दर्य पर आधारित फोटोग्राफी प्रतियोगिता में ताराचंद गवारिया ने प्रथम, दीपिका माली ने द्वितीय तथा डॉ. कमलेश शर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। केन्द्र निदेशक किरण सोनी गुप्ता ने बताया कि प्रथम पुरस्कार विजेता को 50 हजार, द्वितीय को 25 हजार तथा तृतीय को 10 हजार रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। इसके अलावा जगदीश रांका, देवेन्द्र श्रीमाली, अर्पिता जैन, चेतन डागलिया, हितेश जोशी, मनीष कोठारी, द्रक्षी श्रीमाली, नम्रता गांधी, ज्योति शर्मा, मीत गुप्ता, पराग जैन तथा सिद्धार्थ नागर को सांत्वना पुरस्कार के रूप में 5-5 हजार रुपये प्रदान किये जायेंगे।

सक्का को डॉक्टरेट की मानद उपाधि

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर के स्वर्णशिल्पी इकबाल सक्का को महाराष्ट्र में आयोजित हॉप इन्टरनेशनल वर्ल्ड रिकॉर्ड्स एवं हॉप फाउण्डेशन महाराष्ट्र द्वारा आर्ट ऑफ मिनिएचर के क्षेत्र में सोने से निर्मित विश्व की सबसे छोटी 90 सूक्ष्मतम कलाकृतियां बनाकर गिनीज बुक, लिम्का बुक, नेपाल बुक, गोल्डन बुक, इन्टरनेशनल बुक इत्यादि में नाम दर्ज करा देश का नाम रोशन करने जैसी उपलब्धियों के लिए अध्यक्ष डॉ. अहमद शेख द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि, गोल्ड मेडल, ट्रोफी व प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

जलवायु परिवर्तन : अनुकूलन एवं शमन पुस्तक का लोकार्पण

उदयपुर वाटर फोरम, विद्याभवन पोलोटेक्निक महाविद्यालय एवं पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय जलसंवाद कार्यक्रम विद्याभवन पोलोटेक्निक महाविद्यालय में आयोजित हुआ। इस दौरान नाबार्ड के सहयोग से जलवायु परिवर्तन एवं जल ग्रहण विकास कार्यक्रम वागड़ा के अन्तर्गत जन जनजागरूकता हेतु तैयार की गई पुस्तिका 'जलवायु परिवर्तन : अनुकूलन एवं शमन' पुस्तक का लोकार्पण केन्द्रीय जल आयोग के निदेशक शिवदत्त शर्मा, पर्यावरण गतिविधि के संयोजक गोपाल आर्य, जलशक्ति मंत्रालय भारत सरकार के सलाहकार श्रीराम वेदिरे, भूजल बोर्ड के वरिष्ठ वैज्ञानिक विपिनकुमार शर्मा, सी.टी.ए.ई. उदयपुर के डीन डॉ. पी. के. सिंह, विद्याभवन पोलोटेक्निक महाविद्यालय के प्रिंसिपल डॉ. अनिल मेहता एवं अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता द्वारा किया गया।

पुस्तक में जलवायु परिवर्तन, ग्रीन हाऊस प्रभाव, कार्बन चिन्ह, सौर ऊर्जा का महत्व एवं उपयोग, ग्रामीण स्तर पर अनुकूलन एवं जलग्रहण विकास कार्यक्रम के साथ जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए किये गये स्थानीय प्रयासों का समावेश किया गया है। पुस्तक के लेखन में सीईई अहमदाबाद से सेवानिवृत्त विशेषज्ञ संतोष गुप्ता का सहयोग रहा। संपादन आर. एस. गुप्ता एवं निर्देशन जितेन्द्र मेहता द्वारा किया गया। यह पुस्तक हिन्दी में है और स्कूली विद्यार्थियों, अध्ययनकर्ताओं एवं ग्रामीण किसानों के लिए उपयोगी होगी।

इस अवसर पर अलर्ट संस्थान द्वारा जल संरक्षण एवं संवर्धन के तहत किये गये कार्यों एवं अनुभवों की चित्र प्रदर्शनी के साथ जलग्रहण विकास का थ्रीडी मॉडल प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में महान सेवा संस्थान, अर्पण सेवा संस्थान, सेवा मंदिर, मार्वी परियोजना एवं महेशचंद्र गड़वाल द्वारा रूफ रेन वाटर हार्वेस्टिंग के मॉडल प्रदर्शित किये गये। कार्यक्रम में अलर्ट संस्थान के बी. के. गुप्ता, महान सेवा संस्थान के राजेन्द्र शर्मा मौजूद थे। प्रदर्शनी की भारत के विभिन्न राज्यों से आए जल विशेषज्ञों एवं स्थानीय लोगों ने सराहना की। - **जितेन्द्र मेहता**

जिंक को आईएसओ 31000:2018 प्रमाणन

उदयपुर (ह. सं.)। हिन्दुस्तान जिंक ने अपने एंटरप्राइज रिस्क मैनेजमेंट सिस्टम के लिए आईएसओ 31000:2018 प्रमाणन अर्जित किया है। इस प्रमाणन के साथ, कंपनी ने उन व्यवसायों की प्रभावशाली सूची में

प्रवेश किया है जो उद्यम रिस्क मैनेजमेंट के क्षेत्र में उच्चतम संचालन और नियंत्रण मानकों का पालन करते हैं। प्रमाणन में कंपनी की खदानें, मिलें, स्मेल्टर, बिजली संयंत्र और कार्यालय सहित सभी संचालन प्रक्रिया सम्मिलित हैं। आईएसओ प्रमाणन ब्यूरो वेरिटास प्रमाणन द्वारा प्रदान किया जाता है।

उद्यम रिस्क मैनेजमेंट प्रबंधकों को विशिष्ट गतिविधियों से जुड़े या उनसे अलग होने के लिए कुछ व्यावसायिक क्षेत्रों को अनिवार्य कर संगठन की सभी प्रकार के रिस्क की स्थिति को दूर कर अनुकूल बनाने की अनुमति देता है। एंटरप्राइज रिस्क मैनेजमेंट ईआरएम ढांचे के तहत, जिंक ने एक मजबूत सूचना सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली को स्थापित किया है जिसमें नीतियां, मानक संचालन प्रक्रियाएं, प्रौद्योगिकी मानक शामिल हैं और साइबर हमलों की रोकथाम के लिए एक प्रभावी सुरक्षा आकलन और लेखा परीक्षा प्रक्रिया स्थापित की है।

शब्दांक भानावत बी. टेक.

उदयपुर (ह. सं.)। बचपन से ही पढ़ने में कुशाग्र शब्दांक भानावत को 20 अगस्त 2022 को आई.आई.टी. मुम्बई के 60वें दीक्षान्त समारोह में बी. टेक. की डिग्री कुमार मंगलम् बिरला द्वारा प्रदान की गई। 'शब्द रंजन' के डॉ. तुक्तक-रंजना के आत्मज शब्दांक ने बताया कि बचपन से ही मुझे पढ़ाई के साथ-साथ साहित्यिक संस्कार मिले। बड़े दादा, दादा, दोनों भुवाओं तथा नाना-नानी से जो विरासत मिली वही मेरी समृद्ध थाती है। शब्दांक अभी मास्टर कार्ड गुड़गांव में कंसल्टेंट हैं।

करमां री बाळद ने हांके मन बिणजारो

जाणें कद सूं आवे जावे मन बिणजारो।
दुख सुख का बस गीत सुणावे मन बिणजारो।।
करमां की बाळद ने हांके, पर मनड़ा कदै न झांके।।
काया माटी, रेत ही फांके, फाट्योड़ी जिनगाणी टांके।।
खुद कै मांय कदै न झांक्यो, करतो डोले, थारो म्हारो।।
मन बिणजारो।।

कंचन जैड़ी काया थारी, वीनै ही कर दीन्हीं खारी।
घर-घर माही दचका देतां, बीत गई जिनगाणी सारी।।
हीरा जैसो जळम मिल्यो है, वी नै भी कर दीन्हों गारो।
मन बिणजारो।।

भूल गयो बै बातां सारी, परम पिता सूं जो व्ही थारी।
नाम रटूंळा म्हैं नित थारो, जग मांही सब आय बिसारी।।
घर धंधा में उलझ गयो तू, विरथो सारो गयो जमानो।।
मन बिणजारो।।

- **इकराम राजस्थानी**

संभाग के सागवाड़ा में दिखी काली गिलहरी

उदयपुर (ह. सं.)। भारत में पहली बार और विश्व में तीसरी बार ल्यूसिस्टिक कॉमन किंगफिशर पक्षी की उदयपुर में साईटिंग के बाद अब संभाग के सागवाड़ा शहर के समीप काली गिलहरी दिखाई दी है। राजस्थान में अपनी तरह की पहली काली गिलहरी को खोजने, क्लिक करने और पुष्टि करने का श्रेय वागड़ नेचर क्लब सदस्य तितली विशेषज्ञ सागवाड़ा निवासी मुकेश पंवार को जाता है।

पंवार ने बताया कि दुर्लभ मेलाविस्टिक फॉर्म में गिलहरियां तो दिखाई देती हैं परन्तु सामान्य गिलहरियों के बीच एक विशिष्ट काली गिलहरी है। इसके शरीर के

बाल, आंखें, पूंछ के बाल सभी काले हैं। दो अलग-अलग स्थानों पर दो काली गिलहरियां दिखाई दी हैं। प्रथम दृष्टया तो इसे देखने पर गिलहरी जैसा कोई अन्य जीव लग रहा था परन्तु लगातार चार दिनों तक इसके व्यवहार को देखने पर मालूम हुआ कि यह सामान्य गिलहरियां ही है। सिर्फ रंग काला है। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि इस एक मादा गिलहरी के साथ दो बच्चे सामान्य गिहलरियों जैसे ही हैं। सर्प विशेषज्ञ धर्मेन्द्र व्यास ने बताया कि उड़ीसा में ब्लेक टाईगर तथा कर्नाटक, महाराष्ट्र में ब्लेक पेंथर दिख चुके हैं। ठीक उसी तरह ये काली गिलहरियां भी सागवाड़ा में दिखी हैं।

अपना देश अपनी संस्कृति

देवझुलनी एकादशी पर रामरेवाड़ी

भाद्र वदी एकादशी को पूरे देश में मन्दिरों से देवता की झांकी निकाल सवारी अथवा जुलूस के रूप में आम जन को देव-दर्शन कराये जाते हैं। यह दिवस देवझुलनी एकादशी, ग्यारस के नाम से जाना जाता है। जुलूस के बाद देवता को सरोवर ले जाकर स्नान कराया जाता है। सुबह से लेकर संध्या तक विशेष गाजेबाजे एवं हर्षोल्लास के साथ धूमधाम से यह आयोजन होता है। देवता के आगे जगह-जगह भांति-भांति के करतब, स्वांग, नृत्य तथा प्रहसनों के माध्यम से देवतों को रिझाने के साथ खासा जन-मन-रंजन भी होता है।

काष्ठ निर्मित यह पालकी चार व्यक्ति बारी-बारी से अपने कंधे पर ढोते चलते हैं। यह पालकी कहीं वेवाण, कहीं रामरेवाड़ी तो कहीं रथ के नाम से चर्चित है। कहीं-कहीं यह उत्सव दो और तीन दिन तक चलता है तब रथ की संख्या भी एक से दो और दो से तीन हो जाती है। जगह-जगह जहां-जहां चौक अथवा खुली जगह चौराहा होता है वहां वेवाण रोक दिया जाता है ताकि भक्त पूजा-अर्चना कर सकें।

ऐसा भी होता है जब बच्चे-बूढ़े सब रथ की परिक्रमा करते हाथों में डांडिया ले नृत्यमग्न होते हैं। शहनाई नक्कारे आदि की धुन के साथ यह थिरकन लम्बे समय तक सबको मोहित किये रहती है। डूंगरपुर की ओर गलियाकोट में एकम को एक रथ, दूज अर्थात् बीज यानी द्वितीया को सागवाड़ा में दो रथ और तीज को डूंगरपुर में तीन रथ निकाले जाते हैं।

इस सम्बन्ध में प्रदीप गुप्ता का यह कथन उल्लेखनीय है। वे लिखते हैं- ''डूंगरपुर में भूलमणी नृत्य बहुत ही प्रसिद्ध है। गेपसागर की पाल पर पहले पड़ाव में तथा बाद में माणकचौक में देर रात तक नृत्य खेला जाता है। इस नृत्य का अपना विशिष्ट तरीका है जिसमें हर पहला व्यक्ति दूसरे से और दूसरा तीसरे से डण्डों की चोट देकर सर्पिलाकार आगे बढ़ता जाता है।

रथ के साथ चलते हुए तथा डांडिया खेलते हुए कुछ वर्षों पहले तक जैन पुरुषों की विशेष राजसी पोशाक सफेद चूड़ीदार पायजामा, अचकन, कमरबन्द, सिर पर पगड़ी, हाथ में रंगीन रूमान के बीच लकड़ी की बनी रंगीन डांडिया विशेष आकर्षण पैदा करती थी।

लकड़ी की बनी पालकी बीच में लकड़ी के सहारे कपड़े से ढकी रहती है। आगे-पीछे लकड़ी के लम्बे सिरे बाहर निकले रहते हैं जिन्हें चार भोईराज अपने कंधों पर उठाते हैं। वागड़ का रथोत्सव अपनी विशेषताओं के कारण गुजरात, मध्यप्रदेश तथा मेवाड़ के लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है।''

रामरेवाड़ी निकलने से दो माह पूर्व से ही काष्ठ-शिल्पियों के मोहल्ले में उत्सवी माहौल देखने को मिलता है। बसी में रहने वाले सुथार रामरेवाड़ियां बनाने में लगे रहते हैं। नई रामरेवाड़ियां बनाने वाले तथा पुरानी के रंगरोगन करने वाले भी देखे जाते हैं। सुथार शिल्पियों के घर के बालबच्चे तथा गृहणियां भी इस काम में हाथ बंटाती हैं। शौकीन लोग भी अपने मर्जी की रामरेवाड़ियां बनाते हैं।

लेखक द्वारा 10 अगस्त 2012 को की गई बसी गांव की यात्रा के दौरान वहां के खैरादी मोहल्ले में रह रहे मांगीलाल रामचन्द्र खैरादी ने बताया कि रामरेवाड़ी बनाने में जैसा काम वैसा दाम चलता है। वैसे तो भगवान का काम है पर हमारे साथ भी पूरा परिवार जुड़ा रहता है। फिर मौसम के अनुसार ही लोग आते हैं।

ठण्डे दिनों में हमें हाथ-पर-हाथ दिये बैठा रहना पड़ता है। पूछने पर बताया गया कि बनने को तो दो हजार से लेकर साठ हजार तक की और इससे ऊपर तक की बनाने वाले बैठे हैं पर काम को परखने तथा उसकी कद्र करने वाले हरएक नहीं होते हैं। सभी धन्नासेठ भी नहीं होते हैं। भगवान कीड़ी को कण और हाथी को मण देता ही है।

सुथार मोहल्ले में रहने वाले जमनालाल, द्वारकालाल, अवन्तीलाल, रामनिवास, बोतलाल, मदनलाल, गोपाललाल, दौलतराम, शिवलाल सबके सब व्यस्त हैं। कुछ आर्डर की रामरेवाड़ी बना रहे हैं तो कुछ अपनी ओर से ताकि कुछ लोग हाथोंहाथ पसन्द कर ले जा सकें। इधर इनके मुंह पर रामरेवाड़ी की बजाय वेवाण अधिक चढ़ा हुआ है।

पूछने पर पता चला कि वेवाण चार, छह तथा आठ खम्भों के बनते हैं। खम्भों से तात्पर्य पागे अर्थात् पाये या थंभ होता है जिस पर वेवाण टिका रहता है। खम्भों पर पाटिया लगाया जाता है जो बैठक का आधार बनता है। इसे कन्दड़ी का तार का पाटिया और ऊपर का हिस्सा तलाबा की धार कहलाता है। पाटिया से सटे छोटे पाटिये पिथी की भित्तियां, आगे का भाग अगाड़ा पम्बा, पीछे का पिछवाई तथा सामने दोनों ओर हत्थे बने होते हैं। इस पर एक ओर गरूड़ तथा दूसरी ओर हनुमान बिठाये जाते हैं। ये बहुत ही मनमोहक ढंग से खुदे हुए होते हैं।

वेवाण में भगवान ठाकुरजी का सामान रखने के लिए आल्या, उसके नीचे घोड़ली तथा बैठकों पर बहुत ही आकर्षक मेहराब कोरी जाती है। इस पर राधा-कृष्ण तथा उनके आसपास हरे-हरे वृक्ष, बेलें तथा मोर, बाघ, बतखें, तालतलैया जैसे चितराम कोरे जाते हैं। ऊपर-ही-ऊपर घूमटी यानी शिखर पर भलकिया कलश बनाया जाता है।

उसके आसपास छज्जे तथा कंगूरे निकाले जाते हैं। भगवान के बैठने की जगह, आसन को खूब सजाया जाता है। इसे बैठका यानी बैठने की जगह कहते हैं। इस प्रकार एक वेवाण बनाने के लिए दुनियां भर का आरम-सारम करना पड़ता है। जितना समय लकड़ी की ठोका-पीटी में लगता है उतना ही समय चित्रकारी यानी रंग कोराई में लगाना होता है जिससे काष्ठकारी और चित्रकारी दोनों का सामंजस्य ठीक से बैठ जाय। पहले बनाने वाले संतुष्ट हों तब देखने-निरखने वालों की संतुष्टि देखी जाती है। हर शिल्पी की यह धारणा रहती है कि उसके द्वारा बनाई गई वस्तु की देखने वाला कद्र करे। ऐसा होगा तो ही उसका रोजगार चलता रहेगा।

- म. भा.

म्यानों की नक्काशी-कला

-पी. आर. त्रिवेदी-

तलवारों की उपयोगिता आज भले ही कम हो गई हो किन्तु वह समय बहुत लम्बा रहा जब राजे-रजवाड़ों, रईसों, ठिकानों तथा शासकों की पहचान और बल-सम्बल ही तलवारें हुआ करती थीं। सैनिकों के एक हाथ में तलवार तथा दूसरे में ढाल हुआ करती थी। कौन सैनिक तलवार चलाने में कितना दक्ष है और उसकी तलवार कितनी मारक क्षमता रखती है, इसी पर राज्यों की, शासकों की पैठ और दबदबा निर्भर करता था। ऐसे अनेक वीर-वीरांगनाएं तथा रणबांकुरे हुए जिन्होंने अपने हाथ में थामी तलवार कभी नहीं छोड़ी। घोड़ी पर निरन्तर सवार रहते, लवार के बल पर चौकसी करते अनेकों ने अपना जीवन समर्पित किया।

आन, बान तथा शान की प्रतीक तलवारें भी कई तरह की रहीं। मेवाड़ में सिरोही तथा मारवाड़ में जोधपुर की बनी तलवारें दूर-दूर तक प्रसिद्ध रहीं। तलवारों के कारण ही किसी वीर की शोभा बनती। वीरवर गोरा-बादल, जयमल-पत्ता, कल्ला राठौड़ ऐसे तलवार-धनी थे जिनकी वीरता के कई किस्से इतिहास के पन्नों पर दर्ज हैं। गोरा बादल की चित्तौड़ के किले पर सबसे ऊंची लाटें उनकी विजय गाथा का परचम लिये है। इन वीरों ने अपनी कीर्ति-पताका स्वयं लहराई। युद्ध भूमि में गाजर-मूली की तरह दुश्मनों का सफाया करते कभी पराजय का मुंह नहीं देखा।

वीरवर कल्लाजी ने तो जयमल जैसे दस हाथियों वाले योद्धा को अपने कंधे पर बिठाकर वैरियों का मुकाबला किया। दो सिर और चार भुजाओं वाले इन वीरों के सम्मुख दुश्मन घबराते थे। कल्लाजी ने चक्रवात युद्ध की रचना की। उनके दोनों हाथों में तलवारें रहतीं। वे इतनी लचीली थीं कि जिधर चाहें उधर मुड़कर दुश्मनों का खात्मा कर देतीं।

जब तलवारें उपयोग में नहीं आतीं तो वे म्यान में सुरक्षित रहतीं। म्यान उनका आवरण होता। एक तलवार की एक ही म्यान होती। कहावत भी है, 'एक म्यान में दो तलवारें शोभा नहीं देतीं।' म्यान में तलवार नंगी नहीं रहकर ढकी रह सुरक्षित हो जाती है।

म्यान में रखी तलवार कमर में बांध राजपुरुष बड़ा ही शोभित लगता है। सच तो यह है कि बिना ऐसी तलवार कोई राजपुरुष कहीं देखा नहीं जाता। म्यान 'खोल' कहलाती। ये खोलें बड़ी आकर्षक, कलात्मक, नक्काशीदार बारीक करसीदे वाली होतीं। हर ठिकानों में म्यानें बनाने वाले कारीगर होते तथापि जोधपुर की म्यानें विश्व प्रसिद्धि लिये रहीं।

जोधपुर का आड़ा बाजार इसके लिए प्रसिद्ध था। यहां बने शस्त्र और म्यानें दूर-दूर तक सप्लाई होती थीं। कुछ कारीगर तो दरबार के बुलावे पर महलों में ही काम करते पर समय के बदलाव से अब न तलवारें, बर्छी, भाले, ढालें बनती हैं और न म्यानें ही। और तो और तब युद्ध में काम आने वाले सैनिकों के पहनने के अस्त्र ही नहीं बनते, हाथियों और घोड़ों की सुरक्षा के लिए भी अस्त्र बनाये जाते थे जो अब संग्रहालयों की शोभा बने हुए हैं।

इन संग्रहालयों में सुरक्षित अस्त्र-शस्त्र इस बात की गवाही देते हैं कि युद्ध के दौरान सैनिक और उनके वाहन किस प्रकार सुरक्षित रहते थे। कैसी-कैसी तलवारें और अन्य शस्त्र प्रसिद्ध थे और उन्हें काम में लेने वाले वीर बहादुर कैसे-कैसे बांके रणबाज थे।

म्यानों के सम्बन्ध में यह ठीक ही लिखा गया है- कारीगर कपड़े, चमड़े व धातु की सुन्दर म्यानें बनाते हैं। चमड़े की म्यान टिकाऊ व मजबूत होने से ज्यादातर म्यान इसी से बनते हैं। म्यान बनाने के लिए सालर अड़सा व नीमचमेली की लकड़ी असम से मंगवाते हैं। इनकी लकड़ी नर्म होती है। शस्त्र की लम्बाई-चौड़ाई के अनुरूप लकडी काटकर म्यान का रूप देते हैं। भीतरी खोल तैयार कर उस पर चमड़ा चढ़ा दिया जाता है।

इसी तरह जोधपुर में सीनेल की म्यान भी बनती है। म्यान की नोक पर चूकता फिट कर दिया जाता है। कारीगर तलवार, खाण्डा, किरपाण, कटारी, किरच व धरिया, जंभिया जैसे घातक हथियारों के अलावा छुरी, गुप्ती, भाला व बल्लम की म्यान बनाते हैं। पक्की तलवारें बनाने का काम भी होता है। लकड़ी की बनी म्यान पर पीतल की डिजाइनदार म्यान भी बनाते हैं।

एचडीएफसी बैंक ने जीते तीन पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने एशियामनी बेस्ट बैंक अवार्ड्स 2022 में तीन प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते हैं। इस साल बैंक को भारत में विभिन्न श्रेणियों में सभी बैंकों में नम्बर वन चुना गया। सर्वश्रेष्ठ घरेलू कॉर्पोरेट बैंक, एसएमई के लिए सर्वश्रेष्ठ बैंक एवं विविधता एवं समावेशन के लिए सर्वश्रेष्ठ बैंक। अपनी वेबसाईट पर मैग्ज़ीन ने लिखा - 'परिसंपत्तियों के मामले में एचडीएफसी बैंक भारत में निजी क्षेत्र का सबसे बड़ा ऋणदाता है। बैंक के पास अपने 70 मिलियन से ज्यादा ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विस्तार, प्रक्रियाएं, विशेषज्ञता एवं दूरदर्शिता है। जब महामारी ने बाजारों को जकड़ लिया था, तब ये शक्तियाँ काफी काम आईं। एचडीएफसी बैंक के काम की प्रभावशीलता इसके आकार से प्रभावित नहीं होती, जो इसके समग्र सकल गैरनिष्पादित परिसंपत्ति अनुपात साफ है, जो एक साल पहले 1.32 प्रतिशत के मुकाबले मार्च में घटकर 1.17 प्रतिशत रह गया।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पुनरुत्थान से राजस्थान में बढ़ेगा ग्रामीण आवास

उदयपुर (ह. सं.)। भारतीय अर्थव्यवस्था में अगला उछाल ग्रामीण क्षेत्रों से आने के लिए तैयार है क्योंकि इन स्थानों पर सभी क्षेत्रों में गतिविधियों में वृद्धि देखी गई है क्योंकि भारत में गाँव / छोटे शहर दुनिया-भर में होने वाली घटनाओं और कोविड-19 महामारी के व्यवधान के कारण हेडविंड से अछूते रहे हैं। इन भौगोलिक क्षेत्रों में महानगरों से भीतरी इलाकों में विपरीत प्रवासित आबादी के कारण आगे की गतिविधि देखी गई है। इस पुनरुत्थान के परिणामस्वरूप आवास क्षेत्र में गतिविधियों में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, आवास से जुड़े 250 से अधिक व्यवसायों के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष जुड़ाव को देखते हुए, ग्रामीण अर्थव्यवस्था भारत में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि के अगले चरण का नेतृत्व करने के लिए तैयार है। कई आला फाइनेंसर हैं जो अब पहली बार घर खरीदने वालों से घर खरीदने के लिए औपचारिक ऋण की आवश्यकता को पूरा करने के लिए कमर कस रहे हैं।

स्टार हाउसिंग फाइनेंस लि. के एमडी आशीष जैन ने उदयपुर में नए परिसर के उद्घाटन पर कहा कि ग्रामीण आवास भारतीय बंधक बाज़ार स्थान में विकास के अगले स्तर में आगे बढ़ेंगे। महामारी के दौरान रिवर्स माइग्रेशन ने ग्रामीण भारत में आवास स्टॉक की मौजूदा मांग और घरों की एकल परिवार व्यवस्था में 10 मिलियन इकाइयों की मांग बढ़ी है।

टाटा न्यू और एचडीएफसी बैंक में साझेदारी

उदयपुर (ह. सं.)। टाटा न्यू और एचडीएफसी बैंक ने भारत के सबसे ज्यादा रिवार्ड देने वाले को-ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड लॉन्च करने के लिए साझेदारी की घोषणा की। ये कार्ड दो वैरिएंट- टाटा न्यू प्लस एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड और टाटा न्यू इन्फिनिटी एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड में लॉन्च किए जाएंगे। टाटा न्यू के ग्राहक टाटा न्यू ऐप के द्वारा क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं और ऐप द्वारा कार्ड के मुख्य विवरण देख सकते हैं। कार्ड के दोनों वैरिएंट रुपे और वीज़ा नेटवर्क पर उपलब्ध होंगे।

मोदन साहा, सीईओ, फाईनेंशियल सर्विसेज, टाटा डिजिटल ने कहा कि हमें भारत के सबसे बड़े वित्तीय संस्थानों में से एक एचडीएफसी बैंक के साथ साझेदारी में अपने ग्राहकों को ऐसा क्रेडिट कार्ड पेश करने की खुशी है, जो उनके शॉपिंग के अनुभव को और ज्यादा फायदेमंद बना देगा। ग्राहकों को विस्तृत श्रेणी विकल्प, जैसे ग्रोसरी, ट्रैवल, इलेक्ट्रॉनिक्स, फैशन, हैल्थ एवं वैलनेस मिलेंगे। टाटा न्यू एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड टाटा न्यू के मुख्य प्रस्ताव - 'भारतीय उपभोक्ताओं का जीवन आसान बनाने' के अनुरूप है। हमें उम्मीद है कि यह कार्ड टाटा न्यू के अनुभव को बेहतर बनाएगा और देश में बड़ी संख्या में ग्राहक वर्ग को आकर्षित करेगा।

पेटीएम ऑफर्स में विस्तार जारी

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की सबसे तेज और अग्रणी डिजिटल भुगतान और वित्तीय सेवा कम्पनी, पेटीएम ने विविध प्रकार की पेशकशों का विस्तार करने पर काम किया है, जो न केवल लाखों नागरिकों के जीवन के लिए अपूर्व मूल्य है, बल्कि कारोबारियों की व्यवसाय दक्षता को तेजी से बढ़ाने में सक्षम भी हैं।

ऐसी ही एक अभिनव पेशकश जिसने आसपास के किराना स्टोर से लेकर बड़े उद्यमों तक लाखों व्यवसायों की मदद की है, वह है क्विक रिस्पांस (क्यूआर) कोड आधारित भुगतान, जिसे पेटीएम ने साल 2015 में शुरू किया था। इसने पेटीएम के मर्चेंट पार्टनर्स को पूरी तरह से डिजिटल रूप से भुगतान स्वीकार करने की अनुमति दी है। जनवरी 2020 में, कम्पनी ने सभी तरीकों से ऑनलाइन भुगतान प्राप्त करने के लिए वन स्टॉप सॉल्यूशन के साथ मर्चेंट भागीदारों के अपने मजबूत आधार को और सशक्त बनाने के लिए ऑल इन वन क्यूआर कोड पेश करके इस तकनीक के दायरे का विस्तार किया। पेटीएम का ऑल-इन-वन क्यूआर' डिजिटलीकरण के इस युग में, सभी आकार के व्यवसायों से थर्ड पार्टी यूपीआई ऐप, रूपे कार्ड और डेबिट और क्रेडिट कार्ड सहित कई तरीकों से ऑनलाइन भुगतान स्वीकार करने की उम्मीद की जाती है, लेकिन कई व्यापारी अभी भी इस दिशा में पूरी तहर संघर्ष करते हैं नतीजतन बिक्री और राजस्व को और अधिक बढ़ाने से चूक जाते हैं।

कोटक म्यूचुअल फंड की स्मार्ट सुविधा शुरु

उदयपुर (ह. सं.)। कोटक म्यूचुअल फंड ने निवेशकों के लिए एसआईपी, एसटीपी) और एसडब्ल्यूपी के लिए अपनी स्मार्ट सुविधा शुरू की है। यह सुविधा एसआईपी, एसटीपी, एसडब्ल्यूपी के पारंपरिक तरीके को एक कदम आगे ले जाती है, जिसमें निवेशकों की किस्त (एसआईपी, एसटीपी के मामले में) या निकासी (एसडब्ल्यूपी के मामले में) बाजार के मूल्यांकन के आधार पर अलग-अलग होती है। यह नई सुविधा सभी असीमित अवधि वाली योजनाओं, इक्विटी इंडेक्स फंड्स और कोटक इक्विटी हाइब्रिड फंड के लिए उपलब्ध है।

कोटक महिंद्रा एसेट मैनेजमेंट कंपनी के ग्रुप प्रेसिडेंट नीलेश शाह ने कहा कि स्मार्ट एसआईपी को 'स्मार्ट' नाम दिया गया है जो बिल्कुल सही है, क्योंकि इसमें मूल्य-निर्धारण पर विचार किया जाता है और उसी के अनुरूप निवेश किया जाता है। इस नई सुविधा में निवेश या निकासी की रकम इक्विटी के मूल्यांकन - यानी इसके सस्ता, सामान्य और महंगा होने पर आधारित है।

साइंस ओलिंपियाड परीक्षा 15 से

उदयपुर (ह. सं.)। स्कूली छात्रों के लिए ओलंपियाड परीक्षा के सबसे बड़े आयोजक साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन (एसओएफ) ने घोषणा की है कि ओलंपियाड परीक्षाएं इस साल 15 सितंबर से ऑफलाइन आयोजित की जाएंगी। छात्र अपने स्कूलों के माध्यम से एसओएफ ओलंपियाड परीक्षा के लिए पंजीकरण कर सकते हैं। उदयपुर से हर साल एसओएफ ओलंपियाड में करीब 24,000 विद्यार्थी शामिल होते हैं।

साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन के संस्थापक और निदेशक महाबीर सिंह ने कहा कि साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन इस वर्ष 7 विषयों में ओलंपियाड परीक्षा आयोजित करेगा। इसमें इंटरनेशनल जनरल नॉलेज ओलंपियाड, इंटरनेशनल इंग्लिश ओलंपियाड, नेशनल साइंस ओलंपियाड, इंटरनेशनल मैथमेटिक्स ओलंपियाड, नेशनल साइबर ओलंपियाड, इंटरनेशनल सोशल स्टडीज ओलंपियाड और इंटरनेशनल कॉमर्स ओलंपियाड शामिल हैं।

इंटरनेशनल कॉमर्स ओलंपियाड, भारत सरकार से संबंधित इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटेरिज ऑफ इंडिया के सहयोग कराया जायेगा। इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटेरिज ऑफ इंडिया भारत सरकार के कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय के अधिकार क्षेत्र में कार्य करता है। नेशनल साइंस ओलंपियाड के लिए एसओएफ ने 'माईक्लासरूम' के साथ सहयोग किया है, यह छात्रों को जेईई, एनईईटी, सीयूईटी और कैट के लिए तैयार करता है।

गणेश चतुर्थी पर बोहरा गणेशजी की श्रृंगारित प्रतिमा।
- फोटो : राजेंद्र हिलोरिया

सनस्टोन के लाभ मेवाड़ विश्वविद्यालय में उपलब्ध

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी उच्च शिक्षा सेवा प्रदाताओं में से एक सनस्टोन चित्तौड़गढ़ में मेवाड़ विश्वविद्यालय को अपने लाभ प्रदान करेगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा मान्यता प्राप्त, विश्वविद्यालय स्नातक और स्नातकोत्तर स्तरों पर विभिन्न विषयों में कार्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है।

सनस्टोन के सह-संस्थापक और सीओओ पीयूष नांगरू ने कहा कि सनस्टोन के लाभ अब मेवाड़ विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित बी.कॉम और बी.टेक पाठ्यक्रमों के साथ उपलब्ध होंगे। सनस्टोन के फायदे उद्योग-उन्मुख शिक्षा और कौशल कार्यक्रमों तक पहुंच को सक्षम करते हैं, जिससे छात्र कॉलेज में नौकरी के लिए तैयार हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त, सनस्टोन के 1000 से अधिक नियोक्ताओं के मजबूत नेटवर्क के साथ, यह समावेश शीर्ष कंपनियों में छात्रों के लिए प्लेसमेंट के अवसरों का एक बड़ा पूल तैयार करेगा।

मेवाड़ विश्वविद्यालय के निदेशक (प्रवेश) तरुण दाधीच ने कहा कि हमारे कार्यक्रम, सनस्टोन के लाभों के साथ, छात्रों को प्रासंगिक अवसरों और विविध कैरियर प्रक्षेपवक्र के साथ उद्योग-उन्मुख प्रशिक्षण और प्लेसमेंट समर्थन प्राप्त करने में मदद करेंगे। हमें विश्वास है कि सनस्टोन की पेशकशों को जोड़ने से छात्रों का 360 डिग्री विकास सुनिश्चित होगा।

जेके टायर को ईएसजी की सर्वश्रेष्ठ रेटिंग

उदयपुर (ह. सं.)। जेके टायर को केयर ऐज ने ईएसजी रेटिंग दी है। कंपनी के उत्कृष्ट वातावरण, सामाजिक एवं प्रशासनिक प्रथाओं के मद्देनजर जेके टायर को टायर की सब-इंडस्ट्री कैटेगरी में सर्वश्रेष्ठ रेटिंग मिली है। 100 में 75 का ईएसजी स्कोर 'बहुत अच्छा' माना जाता है।

जेके टायर का ईएसजी परफोर्मेन्स अधिकतर क्षेत्रों में इसकी मजबूत प्रतिबद्धता एवं परफोर्मेन्स से स्पष्ट होता है, जो ईएसजी इंटीग्रेशन को सुनिश्चित करता है। कंपनी के पूरे कारोबार में इसका अनुपालन प्रभाविता के साथ किया जाता है। जेके टायर की पारदर्शी एवं सुपरिभाषित नीतियां इसे टायर उद्योग में मार्केट लीडर बनाती हैं। चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि जेके टायर ने ईएसजी मानकों पर 'बहुत अच्छी' रेटिंग का स्कोर हासिल किया है और यह उद्योग जगत में अपने सहकर्मियों के बीच सर्वश्रेष्ठ रही है। हमारा मानना है कि यह सम्मान पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक ज़रूरतों को पूरा करने की दिशा में हमारी प्रतिबद्धता एवं ज़िम्मेदारी को और अधिक सशक्त बनाएगा। हम निर्माण प्रक्रियाओं में हरित ऊर्जा एवं हरित तकनीक को अपनाकर तथा जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम कर स्वच्छ और हरित कंपनी बनने के लक्ष्य की दिशा में प्रतिबद्ध हैं।

यूनियन रिटायरमेंट फंड लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। यूनियन एएमसी ने यूनियन रिटायरमेंट फंड लॉन्च की घोषणा की। यह असीमित अवधि के लिए रिटायरमेंट समाधान उपलब्ध कराने वाली योजना है, जिसमें लॉक-इन पीरियड 5 साल या रिटायरमेंट की उम्र तक होता है। यूनियन रिटायरमेंट फंड के न्यू फंड ऑफर का शुभारंभ 1 सितंबर और समापन 15 सितंबर को होगा। इसमें न्यूनतम 1,000 रुपये और उसके बाद 1 रुपये के गुणकों में निवेश किया जा सकता है।

यूनियन रिटायरमेंट फंड ऐसे समय में आया है जब विभिन्न उद्योगों की कंपनियों को रिकॉर्ड एट्रिशन द्वारा चुनौती दी जा रही है। कर्मचारी उद्योगों में बदलाव का विकल्प चुन रहे हैं और कुछ तो पूर्णता, अर्थ और उद्देश्य की तलाश में अस्थायी नौकरियों के पक्ष में पूरी तरह से बाहर भी हो रहे हैं।

इस ट्रेंड के मुकाबले जीवन प्रत्याशा में वृद्धि 30 साल से बढ़कर लगभग 70 साल हो गई है तथा रिटायरमेंट के बाद के वर्षों की आज़ादी का सही मायने में लाभ उठाने के लिए गंभीरता से योजना बनाने और अनुशासन की जरूरत है। ग्राहकों को आवश्यक अनुशासन प्राप्त करने में मदद करने के लिए इस योजना की संरचना को डिजाइन किया गया है।

डॉ. छतलानी को राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरस्कार

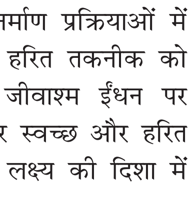

उदयपुर (ह. सं.)। वर्धी वेलनेस फाउंडेशन, उत्तरप्रदेश द्वारा जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) के सहायक आचार्य डॉ. चंद्रेशकुमार छतलानी को राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरस्कार प्रदान किया गया है। वर्धी वेलनेस फाउंडेशन की संस्थापक सौम्या बाजपाई ने बताया कि फाउंडेशन द्वारा दिया जाने वाला राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरस्कार उन असाधारण मानवतावादियों को सम्मानित करने का प्रयास है, जिनका जीवन व कहानी दुनियाभर के व्यक्तियों के दिमाग में अंकित होने में सक्षम है।

कुलपति प्रो. कर्नल एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि प्रशिक्षण, शोध, अकादमिक, लेखन, सॉफ्टवेयर व वेबसाइट निर्माण में 25 से अधिक वर्षो का समृद्ध अनुभव लिए डॉ. छतलानी ने 140 से अधिक सॉफ्टवेयर और वेबसाइट का स्वतंत्र रूप से निर्माण किया गया है। वे दो संस्थाओं ट्रिब्यून इंटरनेशनल वर्ल्डस रिकार्ड्स तथा वर्ल्डस ग्रेटेस्ट रिकॉर्ड से अधिकतम शैक्षणिक प्रमाण पत्र अर्जित करने के रिकॉर्ड धारक भी हैं।

उदयपुर की झरना ने पार किया इंग्लिश चैनल

उदयपुर (ह. सं.)। झीलों की नगरी की अंतर्राष्ट्रीय ओपन वाटर स्वीमर झरना कुमावत ने पांच सदस्यीय रिले टीम के साथ इंग्लिश चैनल पार कर विश्व में उदयपुर का नाम रोशन किया है।

इंग्लैंड में नेशनल हेल्थ सर्विस के लिए कॉन्ट्रेक्ट ऑफिसर के पद पर कार्यरत झरना ने बताया कि 3 अगस्त को उन्होंने रिले टीम के साथ चैनल पार करने में सफलता हासिल की। इंग्लैंड के डोवर बीच से फ्रांस तक का 33 किमी का समुद्री रास्ता बेहद जोखिम भरा था। उनकी रिले टीम ने 14 घंटे 40 मिनट में डोवर से फ्रांस तक की दूरी सफलतापूर्वक पार की। इस रिले में ब्राजील, मोजाम्बिक, कैन्या, पेरू, इडोनेशिया के तैराक उनके साथ थे। डोवर बीच से शुरूआत करने के बाद प्रत्येक तैराक को एक बार में सवा घंटे तक स्वीमिंग करनी थी। तैराकी के क्रम में झरना को दो बार तैराकी करनी पड़ी जिसमें पहली बार शाम को 7 बजे व दूसरी बार अगले दिन सुबह की 2 बजे का टाइम स्लॉट मिला। झरना ने पहली बार में मौसम थोड़ा सा अनुकूल होने पर 1 घंटे 15 मिनट में साढ़े चार किमी की दूरी तय की। उसके बाद दुबारा नंबर 7 घंटे बाद फिर आया तब तक मौसम खराब हो चुका था। समंदर की ऊंची लहरों ने झरना की बहुत कड़ी परीक्षा ली।

वे आगे बढ़ने की कोशिश करतीं तो लहरें फिर से पीछे फेंक देतीं। पानी बहुत ही ज्यादा ठंडा और खारा था।

कोच ने बताया कि उस समय टाइड 5 प्वाइंट 6 नोटिकल माइल का था जो कि स्वीमिंग की भाषा में क्लब फाइव कहा जाता है। जो इस विंड को तैर कर पार कर सकता है वह चैंपियन फौलादी हौसलों वाला स्वीमर कहा जाता है। झरना बताती हैं कि उनके दूसरे प्रयास के बाद समंदर भी अपेक्षाकृत शांत हो गया और बाद के तैराकों को सफलता वाले अंतिम छोर तक पहुंचने में ज्यादा मुश्किल नहीं हुई।

इस साल की रिले रेस में झरना एकमात्र भारतीय अंतर्राष्ट्रीय ओपन वाटर स्विमर हैं। उनकी मां समाजसेविका सुषमा कुमावत ने बताया कि इंग्लिश चैनल फेडरेशन की ओर से रिले टीम के लिए झरना का सलेक्शन होना उनके लिए बहुत बड़ी खुशी का मौका था। उससे बड़ी खुशी इंग्लिश चैनल पार करने पर मिली। झरना के लिए देश-विदेश से बधाइयों का ताता लगा है। झरना पिछले तीन साल से ओपन वॉटर स्विमिंग कर रही हैं। पिछले 12 साल से इंग्लैंड में एसेक्स में रह रही हैं व उसने पिछले साल ही लंदन स्विमिंग मैराथन में भी शिरकत की थी।

कैंसर पीड़िता को दिया नया जीवन

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली हॉस्पिटल में राजस्थान गवर्मेंट हेल्थ स्कीम लाभार्थी, पाली की रहने वाली 30 वर्षीय रोगी का चुनौतियों के बाद सफल 3 डी इम्प्लांट करके रोगी को स्वस्थ्य जीवन प्रदान किया है। इस हाई रिस्क ऑपरेशन को

कैंसर सर्जन डॉ. आशीष जाखेटिया, डॉ. अजय यादव, एनेस्थिस्ट डॉ. नवीन पाटीदार, ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. रामावतार सैनी तथा टीम ने किया।

रोगी ने बताया कि पिछले 5-6 वर्षों से उसकी छाती के बीचोंबीच एक गांठ सी उभर रही थी। गत दिनों उसे गीतांजली हॉस्पिटल में ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. रामावतार सैनी को दिखाया गया। रोगी का 3.0 टेस्ला एमआरआई कर गीतांजली कैंसर सेंटर के सर्जन डॉ. आशीष जाखेटिया के पास भेजा गया। डॉ. आशीष ने रोगी की बायोप्सी करवाई जिसके अन्दर कैंसर के ट्यूमर की पुष्टि हुई। इलाज की योजना के तहत 3 डी इम्प्रिंटिंग के लिए इंजीनियर की मदद ली गई। उसे रोगी की सारी फोटोग्राफ्स दी गयी। यह विज्ञान और टेक्नोलॉजी का संयोजन है। डॉक्टर द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार इंजीनियर ने कंप्यूटर पर विभाजित होने वाला मॉडल तैयार किया। रोगी की स्टेरनम की तरह हुबहू टाइटेनियम का इम्प्लांट तैयार किया गया। जहां-जहां हड्डी को विभाजित करना था, उसी के हिसाब से इम्प्लांट की योजना बनाई गयी। टाइटेनियम इम्प्लांट मिलने के बाद रोगी की सर्जरी की गयी। आमतौर पर इस तरह की सर्जरी करना बहुत मुश्किल होता है और इस तरह के प्रोसीजर राजस्थान के हाई सेन्टर पर ही संभव है। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल भी इनमे से एक है। रोगी को एक सप्ताह में हॉस्पिटल से छुट्टी दे दी गयी।

वीआईएफटी में बॉलीवुड सितारों ने किया 'त्राहिमाम्' और 'अजय वर्धन' का प्रमोशन

दर्शक फिल्मों का बायकॉट ना करें, अपनी उचित प्रतिक्रिया दें : पंकज बेरी

उदयपुर (ह.सं.)। साई तिरूपति विश्वविद्यालय के चेयरमेन आशीष अग्रवाल की प्रेरणा से वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टैक्नोलॉजी एंड मास कम्युनिकेशन के नये सत्र के शुभारंभ पर इंडक्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। डायरेक्टर डॉ. रिमझिम गुप्ता ने बताया कि कार्यक्रम में फिल्म 'अजय वर्धन' के प्रमोशन के लिए बिग बॉस 12 फेम रोमिल चौधरी तथा फिल्म 'त्राहिमाम्' के प्रमोशन के लिए डायरेक्टर दुष्यंतप्रतापसिंह एवं अभिनेता पंकज बेरी वीआईएफटी पहुंचे।

दुष्यंतप्रतापसिंह और पंकज बेरी ने वीआईएफटी कैम्पस में आयोजित पत्रकार वार्ता में बताया कि हम दो फिल्मों के प्रोमोशन के लिए उदयपुर आये हैं। एक फिल्म 'अजय वर्धन' है जो कि चंडीगढ़ के एक मशहूर चिकित्सक की बायोपिक है। डॉ. प्रगति ने फिल्म को डायरेक्ट किया है जो उनके संघर्ष की कहानी है। दूसरी सत्य घटना पर आधारित फिल्म 'त्राहिमाम्' है। फिल्म में मुख्य किरदार अर्शी खान ने निभाया है। उनके साथ अभिनेता पंकज बेरी, मुश्ताक खान, आदि ईरानी सहित कई कलाकारों ने बेहद जीवंत अभिनय किया है। फिल्म के निर्माता सुरेन्द्र तिवारी व स्टूडियो पार्टनर फहीम आर कुरैशी हैं। संगीत पीयूष रंजन ने दिया है। आगामी 04 नवम्बर को यह फिल्म अखिल भारतीय स्तर पर प्रदर्शित होगी।

दुष्यंतप्रतापसिंह के मुताबिक किसी सच्ची घटना पर फिल्म बनाना बेहद चुनौती भरा होता है। ऐसी फिल्में हमारे समाज को एक सच्चाई दिखाती है और इसमें किसी चूक की गुंजाइश नहीं होती है। हमें उम्मीद है 'त्राहिमाम्' फिल्म को जनता जरूर पसंद करेगी।

त्राहिमाम् में मुख्य खलनायक की भूमिका निभा रहे पंकज बेरी ने बताया कि फिल्म में उनका बहुत ही मजबूत किरदार है, जो अन्य खलनायक से अलग है और उन्होंने वीर प्रताप सिंह राणा के किरदार को जीवंत करने का प्रयास किया है। पंकज बेरी ने कहा कि सिनेमा व्यापार नहीं है उत्साह और जीवंतता का नाम है। वेबसीरिज, टीवी सीरियल या सिनेमा को अलग-अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि कलाकार हर जगह पर अपना किरदार निभाता है। लोगों को पुरानी फिल्में और संगीत की तरह आज भी फिल्में पसंद आये इसके लिए विषय और अभिनय पर ध्यान देना जरूरी है ताकि दर्शकों से सीधे संवाद स्थापित हो सके। आजकल फिल्मों के बायकॉट को पंकज बेरी ने उचित नहीं मानते हुए कहा कि दर्शक अपनी प्रतिक्रिया दें ना कि किसी फिल्म को नकारें। ऐसा करने से उससे जुड़े सभी लोगों और उनके रोजगार पर असर पड़ता है।

'अजय वर्धन' में मुख्य भूमिका निभा रहे रोमिल चौधरी ने कहा कि वे बहुत ही संघर्षों से यहा तक पहुंचे हैं। फिल्म इंडस्ट्री में उनका कोई गोड फादर नहीं है। फिल्म में अपने किरदार पर रोमिल ने कहा कि फिल्म में बिना किसी सहयोग के किस प्रकार एक व्यक्ति चिकित्सक बनता है, यह में दिखाया गया है।

टोयोटा की उदयपुर में बी-एसयूवी सेगमेंट में 'अर्बन क्रूज़र हाइराइडर' लॉंच

उदयपुर (ह. सं.)। राजेन्द्र टोयोटा ने उदयपुर में बी-एसयूवी सेगमेंट में नए अर्बन क्रूज़र हाइराइडर का अनावरण किया। यह टोयोटा की पहली सेल्फ़-चार्जिंग स्ट्रॉन्ग इलेक्ट्रिक एसयूवी है जो भारत में अपनी तरह की पहली बी-एसयूवी सेगमेंट में हैं। टोयोटा की टिकाऊ मोबिलिटी पेशकशों में से एक के रूप में अर्बन क्रूज़र हाइराइडर को अपनी बोल्ड और परिष्कृत स्टाइल तथा उन्नत तकनीकी विशेषताओं के साथ टोयोटा कि वैश्विक एसयूवी श्रृंखला में होना उसकी विरासत है, जो इसे इस सेगमेंट में एक आदर्श विकल्प बनाती है। नया मॉडल एक शानदार शांत कैबिन के साथ सर्वोच्च प्रदर्शन और श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ ईंधन दक्षता प्रधान प्रदान करता है। इससे नई एसयूवी भारतीय कार ख़रीदार की विविध आवश्यकताओं के लिए एक आदर्श पसंद बन जाती है।

गाड़ी को लॉच उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा, राजेन्द्र टोयोटा के निदेशक तनय गोयनका एवं राजेन्द्र टोयोटा उदयपुर के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट विनयदीपसिंह कुशवाह ने किया।

तनय गोयनका ने कहा कि टोयोटा को हमेशा प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने वाले एक स्थायी समुदाय के निर्माण की मज़बूती प्रतिबद्धता द्वारा निर्देशित किया गया है। हमारा एक प्रमुख फ़ोकस निम्न कार्बन ऊर्जा स्रोतों की ओर स्थानांतरित करना और विभिन्न महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय लक्ष्यों के समर्थन में व्यावहारिक और टिकाऊ गतिशीलता समाधान प्रदान करना है।

विनयदीपसिंह कुशवाह ने कहा कि टिकाऊ गतिशीलता की ओर तेजी से बढ़ने के अपने वैश्विक दर्शन के अनुरूप, टोयोटा की नवीनतम पेशकश टोयोटा हाइराइडर स्ट्रॉंग हाइब्रिड ई-ड्राइव ट्रांसमिशन द्वारा संचालित होगी जिसमे 1.5 लीटर का डाइनमिक फोर्स इंजन लगा हुआ है जो टीएनजीए पर आधारित है। सेल्फ-चार्जिंग स्ट्रांग हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वाहन होने के नाते, अर्बन क्रूज़र हाइडर 40 प्रतिशत दूरी और 60 प्रतिशत समय इलेक्ट्रिक (ईवी) या जीरो एमिशन मोड पर चलने में सक्षम है। हाइराइडर का नियो ड्राइव वेरियेंट 1.5-लीटर के-सीरीज इंजन के साथ, 5 स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन और 6 स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन में उपलब्ध है, और साथ ही सेगमेंट का पहला, इंटेलेजेंट ऑल व्हील ड्राइव विकल्प भी उपलब्ध है।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (17)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

झालावाड़ : 04 मई 1969

झालावाड़ ख्यालों की दृष्टि से बड़ा प्रसिद्ध स्थल रहा है। यहां के महाराज भवानीसिंह भी इन ख्यालों में बड़ी दिलचस्पी लेते थे। उन्होंने तो स्वयं अपने नाम से 'भवानी नाट्यशाला' नामक रंगमंच ही स्थापित कर दिया जहां उनके संरक्षण एवं मार्गदर्शन में प्रति रविवार को नाटक मंचीत किये जाते थे। इस नाटक मण्डली के साथ-साथ उनकी एक सर्कस मण्डली भी थी।

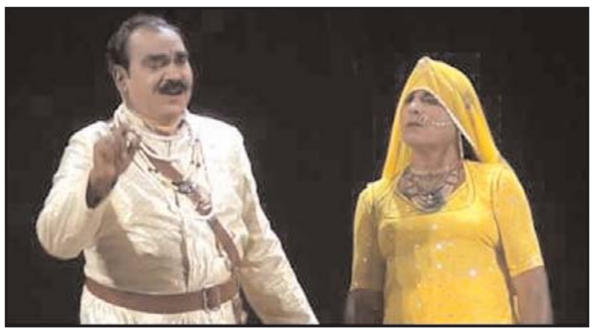

ख्यालों के सम्बन्ध में सत्तर वर्षीय जगन्नाथजी अग्रवाल से जब हमने भेंट की तो पता चला कि ये स्वयं ख्यालों में बड़े अच्छे गवैया तथा बजैया रहे हैं। कहने लगे- मैं तो अपने बचपन से ही यहां ख्याल-तमाशे देखता आ रहा हूं। बचपन में मैं भी भैंसों को चराने के साथ-साथ गाना-बजाना किया करता था। मेरे साथ एक गुरु का लड़का था। वह सारंगी बजाता था। उसकी देखादेख मैं भी सीख गया।

यहां के माच ख्यालों का बड़ा जोर था। इन ख्यालों के लिए आलीशान माच बांधे जाते थे। ये माच आठ-आठ, दस-दस फीट ऊंचे होते थे। नीचे तख्ते रहते थे। बांस-बल्लियों द्वारा इन माचों की महीने-महीने भर तक खूब तैयारी की जाती थी। इनकी सज्जा के लिए सारा गांव उमड़ पड़ता था। शौकिया लोग इसमें खूब पैसा खर्च करते थे। इससे उनकी नामवरी भी खूब होती थी और वे लाग प्रतिष्ठा की निगाहों से देखे जाते थे।

फलियों और कौर-किनारियों से मंडप सजाये जाते थे। चंदोवा ताना जाता था। गर्मी की लम्बी-लम्बी रातों में इन ख्यालों की सुखदता शरदपूर्णिमा की भांति खिल उठती थी। गोपीचंद, आभलदे, खेमरा, ढोलामारू, मीर गाफरू, प्रहलाद, हरिश्चन्द्र, मोरध्वज, अमरसिंह राठौड़ आदि खेलों में जगन्नाथजी ने खूब सारंगी बजाई। इनके साथ तबले तथा ढोलक वाले संगत करते थे। पहले कलाकार गाते तब तबला वादक संगत करते। टेरिये टेर झेलते और कलाकारों के पांव अभिनय के लिए थिरक पड़ते।

उस्ताद अपने हाथ में प्रदर्शित करने वाले ख्याल का खरड़ा लिए प्रत्येक अभिनेता के पीछे-पीछे घूमते और अपने हिस्से का बोल उसके कान में कहकर ढाई कडूये-चौकड़ये दोहों का समा बांधा जाता।

झालावाड़ के सन्निकट गागनोर तथा पाटण में भी इन ख्यालों के प्रसिद्ध अखाड़े थे। मंगलपुरा में घंटाघर की जगह जहां पहले चौगान था, गढ़ के सामने का सरे दरवाजा, सत्यनारायण का चौक, धौंकले का बालाजी, राधा-कृष्ण मन्दिर, पाटण की चन्द्रभागा नदी आदि खेल के लिए प्रसिद्ध स्थान रहे हैं।

इधर भंवरलाल बीलेदार, रामचन्द्र कसारा, वेणीराम कहार, भंवरलाल जीणगर,नंदा लखारा, नंदलाल बारबर अच्छे खिलाड़ी हैं। उस्तादों में मन्नाजी अग्रवाल, मन्नाजी सिंधी, मन्नाजी खूंट वाले, मगनलाल दरोगा, मदनलाल अग्रवाल, मोजड़ी पुजारी, रामचन्द्र गाड़ीवान, भंवरसिंह के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहां के कुंवर महेन्द्रप्रताप सिंह तथा डॉ. नंदलाल शर्मा ने हमें सत्तर वर्षीय खिलाड़ी अब्दुलाजी से भेंट कराई। ख्यालों में ये रानी बनते थे। आज भी इन्हें कई ख्याल याद हैं। अपने ख्याली जीवन के इन्होंने कई संस्मरण सुनाये। कहने लगे- 'बाबूजी ख्यालों के लिए आप अब हमारे पास आये हैं जबकि हमारे पांव कब्र में लटक रहे हैं। आंखें अपनी दृष्टि छोड़ रही हैं। शरीर जीर्णशीर्ण हो गया है। अब तो वह आवाज भी नहीं रही। मैं आपको अपनी एक भी कला नहीं बता सकता।

मैं रानी बनता था। अस्सी-अस्सी तोले का मैंने जेवर पहना हुआ है और जब मंच पर आ खड़ा होता था तो लगता था कि जैसे ऊपर से कोई इन्द्राणी उतर पड़ी है। क्या जोश-होश था। तीन-तीन महीने पहले से हम लोग तैयारियों में लग जाते थे। मटकियों में मुंह डाल-डाल गाने का अभ्यास करते थे। अपनी आवाज को जोर-जोर से गुंजाते और उसमें बुलन्दगी पैदा करते थे। ख्याल प्रारम्भ होने से पहले और समाप्त होने के बाद हाथी, घोड़े और ऊंट पर हमारी शाही सवारी निकाली जाती थी। अब तो सारा जीवन ही टेसमेस हो गया है।'

यहां के भंवरसिंह, सांगोद का बशीर जुलाहा, गोविन्दराम भंडारी ने ख्याल-लेखक के रूप में बहुत प्रसिद्धि पाई पर इनकी पुस्तकें प्रकाशन की पहुंच से बाहर रहीं।

झालावाड़ में रेखचन्द तंबोली, भंवरलाल जीणगर, श्रीनाथ मुखिया, केशरीसिंह राजपूत, चौथमल माली, प्रभुलाल अग्रवाल, भूरालाल सेववाला, करीम बक्ष जागीरदार, दादा नंदा तथा देवीलाल के पास हस्तलिखित ख्यालों की बहियां हैं। पाटन के कसारों के मन्दिर में भी इन ख्यालों के खरड़े मिल सकते हैं।

पाटन में कसारों के मन्दिर में रामनवमीं पर कसारे लोग प्रतिवर्ष रामलीला करते हैं। नृसिंह चतुर्दशी पर नृसिंहावतार के स्वांगों की भी यहां अच्छी परम्परा रही है। आषाढ़ सुदी तृतीया को रथयात्रा का जुलूस निकाला जाता है। होली पर इधर मेहर जाति के लोग फगवे निकालते हैं जो गणगौर तक चलते हैं। ये फगवे नाना प्रकार के स्वांग होते हैं। फाल्गुन में प्रदर्शित होने के कारण इन्हें फगवा कहा जाता है। इन स्वांगों के माध्यम से पैसा इकट्ठा किया जाता है। औरतें भी फगवे निकालने में बड़ी माहिर होती हैं।

झालावाड़ के भंवरलालजी शर्मा के सहयोग से मुझे यहां रेखचन्द तंबोली के पास ख्यालों का एक रजिस्टर भी देखने को मिला। इस रजिस्टर में गोपीचन्द भरथरी, मोरध्वज, पचफूला, सदाव्रक्ष सालंगा तथा राजा हरिश्चन्द्र के ख्याल लिखे हुए हैं। यह रजिस्टर स्वयं इन्हीं का नकल किया हुआ है। ख्याल की मूलभाषा में इन्होंने नकल करते वक्त काफी हेरफेर कर दिया है। उस्ताद की जगह भी इन्होंने स्वयं अपना नाम अंकित कर दिया है। इससे ये ख्याल किसके रचे हुए हैं यह पता नहीं लगता। सदाव्रक्ष सालंगा तथा राजा हरिश्चन्द्र ख्याल के अन्त में 'संवत् नेवासी उतरतां सजी खेल कियो तयार' लिखा मिलता है।

रणथंभोर तथा गोगुन्दा के गणेशजी की तरह गागनोर के गणेशजी भी बड़े प्रसिद्ध रहे हैं। इधर के ख्यालों में सबसे पहले इन्हीं गणेशजी की स्तुति की जाती है। रेखचन्द के पास संग्रहीत सभी ख्याल में भी सर्वप्रथम गागनोर के इन्हीं गणेशजी का विविध रूपों में स्मरण किया गया है।

पाटूंदा : 06 मई 1969

कोटा से हम लोग बस द्वारा यहां के वकील अमरसिंहजी के साथ पाटूंदा पहुंचे। वकील साहब यहीं के निवासी हैं। यहां के सांस्कृतिक एवं कलात्मक कार्यकलापों के उपजीव्य भी ये ही हैं। ये स्वयं अच्छे कवि एवं गद्य लेखक भी हैं।

सन् 1954 में इनका 'नि:श्वास' नामक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ। उसके बाद यद्यपि इनका कोई संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ परन्तु इनका कवि अनवरत सृजन में सिद्ध होता रहा। फलत: इन्होंने लगभग दो हजार छन्दों का 'आम्रपाली' महाकाव्य, प्रताप-शक्तिसिंह से संबंधित 'पुनर्मिलन' नामक खण्डकाव्य तथा पद्मिनी, स्वर्णपल, प्यासी खोज, मधुदूति, बहादुरशाह नामक काव्य-ग्रन्थों का प्रणयन किया।

कविता के साथ-साथ गद्य लिखने में भी इनकी लेखनी सफल गोताखोर रही है। स्वप्न शर्बरी, दिवाभास, तुतली वाणी नामक गद्य संकलन सौ-सौ मुक्ताओं की अमोल मालाएं हैं। यहां के जमनालाल पुरोहित भी अच्छे कवि थे। उनका कादम्बरी का हिन्दी पद्यानुवाद प्रसिद्ध है।

पाटूंदा रामलीला का सुन्दर रंगस्थल है। यहां की रामलीला बड़ी प्रसिद्ध रही है। लगभग 93 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई यह रामलीला आज भी अपने वैशिष्ट्य के कारण इस क्षेत्र की गर्वोक्ति बनी हुई है। यह रामलीला हाड़ौती बोली में प्रदर्शित की जाती है और यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। चैत्र सुदी पंचमी से प्रारंभ होकर यह लीला वैसाख वदी तृतीया तक चलती है। पंचमी को गणेशजी की सवारी निकाली जाती है।

'मनाऊं छतरी का गणराज। जनकपुर आप पधारो महाराज।।' के रूप में यहां के छतरी के गणेशजी के वहां जाकर उन्हें निमंत्रित किया जाता है। अष्टमी को राम विवाह की वर निकासी निकलती है- 'प्रभु की जान जनकपुर जासी। तोरण पहली होसी निकासी।।' इन सवारियों में जकड़ी भजनों की भावनिष्ठता देखते ही बनती है। दशमी को रावण वध होता है।

इस दिन दक्षिण दिशा में कुम्हारों के टीले पर घड़ों के रूप में रावण के सिर को लकड़ियों से चकनाचूर कर दिया जाता है। लंका पर चढ़ाई की तानें भी कुम्हारों के यहां से दी जाती हैं- 'प्रभु ने लंका पर करी छै चड़ाई।' इस दिन भैरव भवानी के स्वांग भी प्रदर्शित किये जाते हैं। राम-लक्ष्मण-जानकी की सवारी बड़े भव्य रूप में हाथी-घोड़े पर निकाली जाती है।

इस लीला के प्रारंभकर्त्ता गणपतलालजी गुरु, अमरलालजी तथा चतुरभुजजी पुरोहित थे। गणपतलालजी को गाने-बजाने का बड़ा शौक था। वे नब्बे वर्ष तक जीवित रहे। उनका देहावसान हुए यद्यपि तीस वर्ष व्यतीत हो चुके हैं परन्तु उनका लगाया गया यह लीला-पौधा आज विशाल वट-वृक्ष के रूप में फलत-फूलता हुआ उनकी स्मृति-जड़ों को मजबूती के साथ कायम रखे हुए है। इस लीला के साथ वाद्य रूप में चिकारा, कमायचा, सारंगी, ढोलक तथा मजीरे बजाये जाते हैं। इसमें आठ-आठ, दस-दस व्यक्ति टेर झेलने वाले होते हैं। पात्र अपने हिस्से का अंश स्वयं ही बोलते हैं।

रामलीला से पूर्व यहां समया होता था। यह समया तीन दिन तक चलता था जिसमें धनुषयज्ञ तक का दृश्य प्रदर्शित किया जाता था। वर्तमान में राधाकिशनजी इस लीला के कर्णधार हैं। यहां मदनमोहनजी ब्राह्मण तथा धूलीलालजी तेली एवं उनके अन्य लीला-साथियों से लीला सुमिरण, धनुषयज्ञ, वनगमन, लंका चढ़ाई, रामविलाप, रावण-सीता संवाद तथा लक्ष्मण-शक्ति के कुछ स्थल रेकार्डिंग किये।

यह लीला यहां के लक्ष्मीनारायण मन्दिर के पास होती है। अब तो यहां स्थायी रूप से लीला का पक्का रंगमंच भी इन लोगों ने बनवा दिया है। मांगरोल, सीसवाली, पीपलदा, कापरेण, कनवास, जोलपा आदि गांवों में भी इस लीला की बेल बढ़ी है।

लीला के अतिरिक्त इधर पृथ्वीराज, रामरसायण, मानसिंह, दूदा तथा हमीर के कड़े ; अहमना के छोये एवं भटवाड़े की राड़ गाने वाले प्रसिद्ध हैं। कड़ों का प्रारंभ नक्काड़े की किड़किड़ाहट लिए होता है। कड़े गाने वाले गायक के साथ आठ-दस व्यक्ति उसकी गायकी झेलने वाले होते हैं। ये कड़े रात को होते हैं जो रात-रात भर चलते हैं।

छोयों के साथ भूण (घड़ा) बजता है। रामू भील, धूलीलाल राठौड़ तथा नंदा तेली छोये गाने में उस्ताद थे। दशहरी आसोज पर रामरसायण के कड़ों का अधिक प्रचलन रहा है। इन्हें रामनिसाण भी कहते हैं। यहां के गणपतलालजी गुरु के पास पृथ्वीराज के कड़े, हाड़ौती रामायण की मूल प्रति तथा ख्यालों का अच्छा संग्रह है।

रात्रि को 11 बजे यहां कुम्हारों की बस्ती में उनका नृत्य भी देखा। यह नृत्य शादी के अवसर पर कुम्हार लोग स्वयं अपनी ही बिरादरी के बीच करते हैं। एक व्यक्ति साखिया बोलता रहता है और दूसरा रायगुरगुरी नामक वाद्य के साथ नृत्य करता है। इसके साथ कुम्हारिनें भी नाचती हैं। इस प्रकार बारी-बारी से कुम्हार स्त्री-पुरुष उठते रहते हैं और शादी की खुशी में नृत्य करते रहते हैं।

यह नृत्य अधिक कलात्मक नहीं होता और न विविध भंगिमाएं ही इसमें प्रदर्शित की जाती हैं। इसका हमने थोड़ा सा अंश रेकार्डिंग भी किया। इसे कुम्हारों की संख्या कहते हैं। रायगुरगुरी लगभग आठ इंच के व्यास की छोटी सी ढोलक होती है जो एक तरफ हाथ से तथा दूसरी तरफ चटक्ये (डंके) से बजाई जाती है।

- क्रमश :

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।